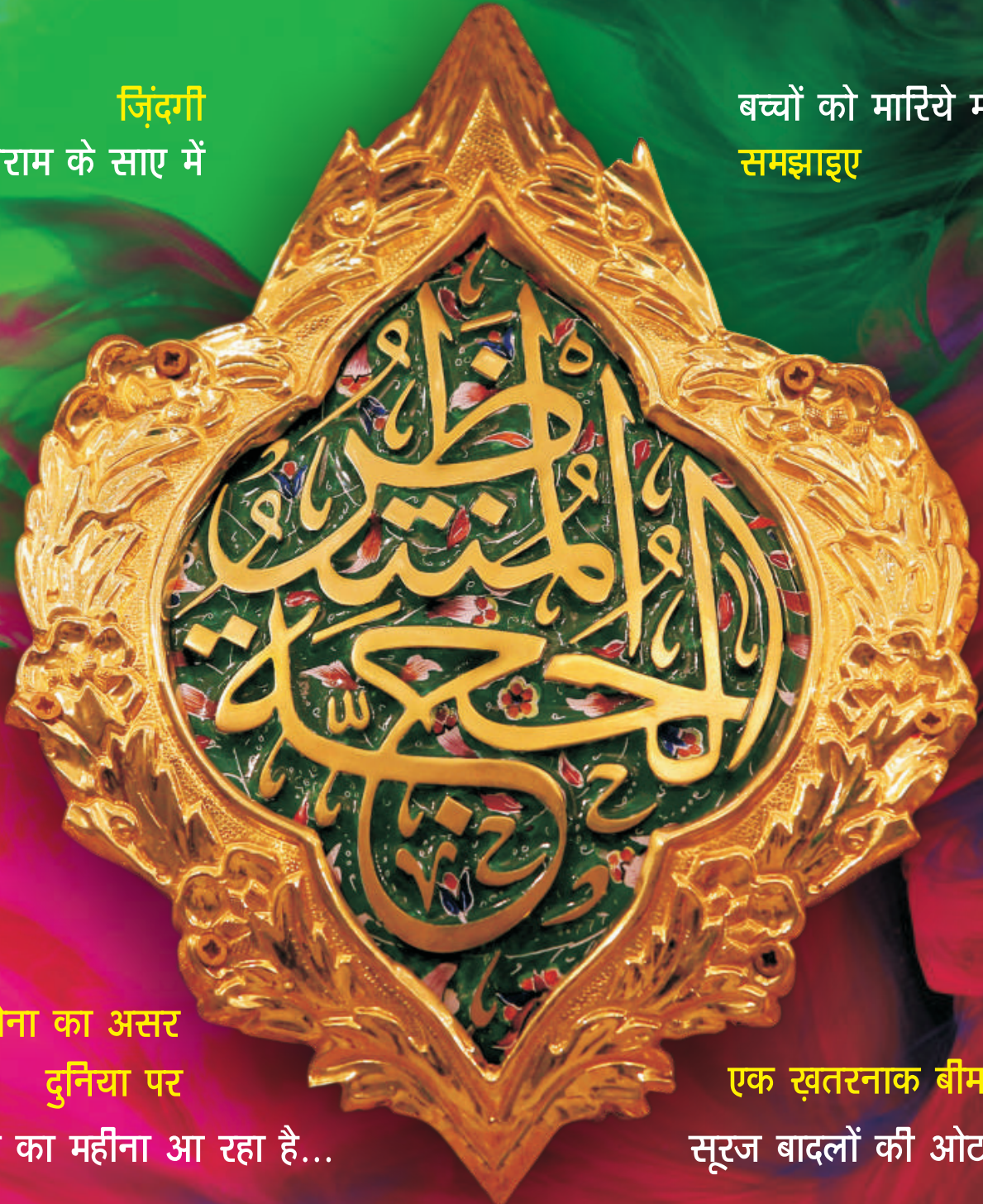


Apr 2020 30:00

मारयाम

जिंदगी
एहतेराम के साए में

बच्चों को मारिये मत,
समझाइए



कोरोना का असर
दुनिया पर
खुदा का महीना आ रहा है...

एक खतरनाक बीमारी
सूरज बादलों की ओट में



इमामे ज़माना^{अ०}

मेरे जुहर के लिए ख़ूब दुआएं करो
क्योंकि इसी में तुम्हारी मुश्किलों और परेशानियों का हल है।

15 शाबान आप सब को मुबारक हो

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

MOHTARMA "GULSHAN"

G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111

IRFAN ALI PRADHAN

403 & 404, A Block REGALIA HEIGHTS
Ahmadabad Palace Road KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

UNITY P.G. & LAW COLLEGE, LUCKNOW

Affiliated to University of Lucknow | Recognized Under Section 2(f) and 12 (B) of UGC Act.



ADMISSION OPEN

www.unitypgcollege.com | unitydegree@gmail.com

FOUNDER HON'BLE LATE JUSTICE MURTAZA HUSAIN

Ex- Lokayukt (U.P.)



FACILITIES

- ❖ Experienced Faculty
- ❖ Wi-fi Campus with Lush Green Cover
- ❖ Active Placement Cell
- ❖ Scholarship
- ❖ Free coaching for IAS, IPS, PCS(J), Bank PO & other Competitive Exams
- ❖ Fee Concession to meritorious students
- ❖ Moot Court, ET Room and Language Room
- ❖ Separate Hostel Facility for Boys and Girls
- ❖ Hygienic & well equipped cafeteria
- ❖ Transport facility
- ❖ Gymnasium

COURSES OFFERED

LL.B (Hons.) | LL.B (3 Years) | B.Com | M.Com
B.B.A | B.Ed. | D.El.Ed. (B.T.C) | B.A

WE ARE PROUD OF OUR STUDENTS



Tarif Mustafa Khan
(U.P. PCS J) 2018



Anuj Sinha
(U.P. PCS J) 2018



Kuwar Divyadarshi
(U.P. PCS J) 2018



Nitinendra Singh
(M.P. PCS J) 2018



Diksha Agarwal
(U.P. PCS J) 2018



Shivam Singh
(U.P. PCS J)



Urooj Fatima
(U.P. PCS J)



Nidhi Solanki
(U.P. PCS J)



Shivam Singh
(Bihar & JK PCS J)
2019

📍 Sector B, Basant Kunj, IIM By Pass Road, Lucknow-226101

Contact : 7570006104 | 7570006105 | 📞 7570006113

कोरोना से मरने वाले के गुस्ल, कफ़न और नमाज़े मय्यत के अहकाम

आयतुल्लाह ख़ामेनई

सवाल: मेडिकल एक्सपर्ट्स का कहना है कि कोरोना वायरस बहुत तेज़ी से फैलता है। अब अगर कोई आदमी इस बीमारी में मर जाए तो उसके गुस्ल, कफ़न और उसकी नमाज़े मय्यत के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब: सिर्फ़ इस बीमारी में मरने की वजह से मय्यत से जुड़े वाजिब अहकाम साफ़ित नहीं होंगे (ख़त्म नहीं होते हैं)। इसलिए हाईजीन से जुड़े उसूलों को भरपूर ध्यान रखते हुए और अपने बचाव की चीज़ों को इस्तेमाल करते हुए (चाहे इसके लिए पैसा ही क्यों न ख़र्च करना पड़े) गुस्ल, हुनूत, कफ़न, नमाज़े मय्यत और दफ़न से जुड़े कम से कम वाजिब अहकाम को अंजाम दिया जाना चाहिए।

अगर (मय्यत को) गुस्ले तरतीबी न दिया जा सकता हो तो गुस्ले इरतेमासी दिया जाए।

और अगर गुस्ल ही न दिया जा सकता हो तो मय्यत के हाथों से सिद्र के पानी, काफूर के पानी और ख़ालिस पानी से गुस्ल के बदले इसी तरतीब से मय्यत को तयम्मुल कराया जाए, हुनूत किया जाए और (चाहे लिबास के ऊपर से ही सही) कफ़न पहनाकर दफ़न किया जाए।

अगर किसी को कोरोना बीमारी लग जाए और वह इसी बीमारी में मर जाए तो आयतुल्लाह ख़ामेनई के फ़तवे के मुताबिक़ उसके गुस्ल, कफ़न और दफ़न के बारे में शरई अहकाम यह हैं:

मय्यत को गुस्ल दिया जाना ज़रूरी है लेकिन गुस्ल देते वक्त हाईजीन के उसूलों का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए जैसे ईरान में जो लोग गुस्ल दे रहे हैं वह एक तरह का ख़ास लिबास पहनते हैं, ख़ास तरह की कैप व मास्क लगाते हैं और ख़ास दस्ताने पहनकर गुस्ल देते हैं।

गुस्ल व कफ़न के बाद मय्यत को एक मोटी प्लास्टिक में सील कर दिया जाता है। इसके बाद सेनेटाइज़ करके दफ़न किया जाता है।

लेकिन अगर कहीं यह सारे काम न किये जा सकते हों तो फिर गुस्ल के बजाए मय्यत को तयम्मुम कराया जाएगा।

और अगर किसी मुल्क में वहाँ की हुक्मत लोगों की सेहत व सलामती को ध्यान में रखते हुए इस तरह के किसी भी काम की इजाज़त न दे यानी घर वालों को मय्यत न दे तो ऐसी हालत में जाहिर है कि अपने आप गुस्ल व तयम्मुम वाला हुक्म साफ़ित हो (उठ) जाएगा क्योंकि हमारे सामने कोई रास्ता ही नहीं है। असल में यहाँ एक तरह की मजबूरी है। इस मजबूरी को ध्यान में रखते हुए इसी तरह नमाज़ पढ़कर दफ़न कर दिया जाए।

इसलिए गुस्ल, तयम्मुम, हुनूत और कफ़न के अहकाम तभी लागू होंगे जब यह सब काम किए जा सकते हों।

यह अहकाम भी एक के बाद एक हैं। यानी पहले मरहले में गुस्ल है। गुस्ल न दिया जा सकता हो तो तयम्मुम कराया जाएगा।

इसी तरह कफ़न में मामले में भी हो सकता है कि तीनों कफ़न न दिए जा सकते हों। अगर ऐसा है तो बस एक ही कफ़न दिया जाएगा। यहाँ तक कि अगर प्लास्टिक कवर (जिस मोटे प्लास्टिक कवर में मय्यत को लपेटा गया है) के ऊपर से ही कफ़न दिया जा सकता हो तो उसी के ऊपर से कफ़न पहनाया जाएगा।

अगर हुक्मत के हुक्म की वजह से यह काम भी न किया जा सकता हो यानी हुक्मत इसकी भी इजाज़त न दे और घर वालों को मय्यत न दे तो ज़िम्मेदारी उठ जाएगी और उसी तरह नमाज़े मय्यत पढ़ी जाएगी।

और अगर नमाज़े मय्यत की भी इजाज़त न मिले और यूँ ही दफ़न कर दिया जाए तो (दफ़न के बाद) क़ब्र पर नमाज़े मय्यत पढ़ी जाएगी।



कोरोना से मरने वाले के गुस्ल, कफ़न और नमाज़ मय्यत के अहक़ाम

आयतुल्लाह सीस्तानी

सवाल: अगर कोरोना से कोई मुसलमान मर जाए उसे भी दूसरे लोगों की तरह गुस्ल देना होगा या तयम्मुम काफी होगा ?

और अगर हुक्मत तयम्मुम की इजाज़त भी न दे बल्कि मय्यत को दवा लगाकर पैक करवा दे और दफ़न से पहले किसी को भी उसे खोलने की इजाज़त न दे तो ऐसी सूरत में हमारी शरई ज़िम्मेदारी क्या है ?

जवाब: जिन जगहों पर कोरोना वायरस के फैलने के डर की वजह से मय्यत को गुस्ल न दिया जा सकता हो वहाँ अगर कोई दूसरा मय्यत को तयम्मुम करा सकता हो तो तयम्मुम कराए चाहे दस्ताने पहनकर की ही यह काम करना पड़े। और अगर तयम्मुम भी न दिया जा सकता हो या हुक्मत इस काम से भी रोक दे तो मय्यत को गुस्ल और तयम्मुम के बग़ैर ही दफ़न कर दिया जाए।

सवाल: अगर मय्यत के सातों हिस्सों पर हुनूत न किया जा सकता हो तो इसके बदले में क्या किया जाए ?

जवाब: ऐसे में हुनूत का हुक्म साफ़ित हो (उठ) जाएगा और इसका कोई बदल नहीं है।

सवाल: क्या मय्यत को तीनों कफ़न देना वाजिब है ? और अगर हुक्मत कफ़न देने के लिए मय्यत को खोलने की इजाज़त न दे तो ऐसे में हम क्या करें ?

जवाब: मय्यत को तीन कपड़ों का कफ़न देना वाजिब है चाहे मय्यत की पैकिंग के ऊपर से क्यों न कफ़न पहनाया जाए और अगर पूरा कफ़न न दिया जा सकता हो तो फिर जितना दिया जा सकता हो उतना ही दिया जाए जैसे चादर जिससे मय्यत का पूरा बदन पूरी तरह से छुप जाए।

सवाल: कुछ मुल्कों में कोरोना से मरने वालों को जलाया जा रहा है। क्या मुसलमान मय्यत के रिश्तेदार इस काम की इजाज़त दे सकते हैं और अगर हो सकता हो तो क्या इस काम से रोकना उनकी शरई ज़िम्मेदारी है ?

जवाब: मुसलमान मय्यत को जलाना जायज़ नहीं है। मरने

वाले के रिश्तेदार और दूसरों पर वाजिब है कि इस काम से रोकें और शरीअत के मुताबिक़ दफ़न करने की पूरी कोशिश करें।

सवाल: मय्यत को ताबूत में रखकर दफ़न करना कैसा है ?

जवाब: यह काम जायज़ है लेकिन अगर हो सके तो मय्यत को ताबूत में दाएं करवट से क़िब्ला रुख़ लिटाया जाए जिस तरह क़ब्र में लिटाते हैं।

सवाल: जानकारों का कहना है कि कोरोना की वजह से मरने वालों को क़ब्रिस्तान में दफ़न करने में कोई हरज नहीं है और न ही किसी ख़ास एहतियात जैसे मय्यत को गहराई में दफ़न करने की ज़रूरत है क्योंकि इस वायरस को ज़िंदा रहने के लिए जानदार सतह का होना ज़रूरी है। बीमार के मरने के बाद हो सकता है कि यह वायरस कुछ घंटों तक ज़िंदा रहे मगर यह उसके बदन से बाहर नहीं आ सकता और आख़िर में मर जाएगा। इसलिए मेडिकल एहतियात जैसे दस्ताने और मास्क पहनकर मय्यत को दफ़न किया जा सकता है और दफ़न होने के बाद वायरस के फैलने का डर नहीं है।

अब सवाल यह है कि जब ऐसा है जैसा कि ऊपर कहा गया है तो क्या मय्यत को किसी क़ब्रिस्तान में दफ़न करने से रोक जा सकता है जबकि ऐसा करना मय्यत के वारिस और खुद मय्यत की वसियत के भी ख़िलाफ़ हो ?

जवाब: जो सवाल किया गया है उसके मद्देनज़र मय्यत को क़ब्रिस्तान में दफ़न करने से रोकना जायज़ नहीं है और ज़िम्मेदारों के लिए ज़रूरी है कि इस काम में आसानी पैदा करें।



मरयाम

Vol:9 | Issue: 02 | APRIL, 2020



इस महीने आप पढ़ेंगी...

कब तक बर्दाश्त करना है?	7
हक पर कौन है?	10
ज़िंदगी एहतेराम के साए में	12
कोरोना से जुड़ी कुछ खास जानकारियाँ	14
बच्चों के दीनदार बनने में मां-बाप का रोल	17
खुदा का महीना आ रहा है...	19
कोरोना का असर दुनिया पर	22
तौहीद (27)	26
जवानी	28
अगर हम इन आयतों पर अमल कर लेते	32
तफ़सीर: सूरए तौहीद	33
सूरज बादलों की ओट में	35
वह कौन था?	37
बच्चों को मारिये मत, समझाइए	39
एक ख़तरनाक बीमारी	40

Chief Editor

S. Mohd. Hasan Naqvi

Editorial Board

Nazar Abbas Rizvi
Mohd. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi
Imtiyaz Abbas Rizwan

Managing Editor

Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor

Mohammad Aqeel Zaidi

Distribution Manager

Baqir Hasan Zaidi

Contributors

Sajjad Haider Safavi
M. Husain Zaidi

Graphic Designer

Siraj Abidi
98390 99435 

Typist

S. Sufyan Ahmad

सलाम पर आप पर ऐ हुज्जते खुदा!

‘मरयाम’ में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामन्दी हो, यह ज़रूरी नहीं है। ‘मरयाम’ में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कार्रवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और ‘मरयाम’ में छपे लेख और तस्वीरें ‘मरयाम’ की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले संपादक से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। ‘मरयाम’ में छपे किसी भी कॉन्टेन्ट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कार्रवाई प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद हम किसी भी तरह की पूछताछ और कार्रवाई पर जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक ‘मरयाम’ के लिये आने वाले कॉन्टेन्ट्स में ज़रूरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprietor S. Mohammad Hasan Naqvi
printed at Swastika Prinwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and
published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003

MARYAM A/C: 55930 10102 41444
Tahseenganj Branch (Unity Branch) Lucknow

Union Bank of India
IFSC: UBIN0555932

सब्सक्रिप्शन के लिए चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ़ MARYAM लिखिए।

चेक, ड्राफ्ट और मनी ऑर्डर इस पते पर भेजिए:

Mohd. Hasan Naqvi, 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 99566 20017, email: maryammonthly@gmail.com

Head Office: Imambada Ghufanmab, Chowk Mandi, Lucknow

Registered Office: 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

कब तक बर्दाश्त करना है ?

■ हुदा सादात

शादी के बाद की ज़िन्दगी कई घंटों के उस डॉइलॉग की तरह होती है जिसमें बातें करने वाले लड़ भी पड़ते हैं, एक-दूसरे के खिलाफ़ बोलते भी हैं और कभी ऐसा भी लगता है कि आगे बात नहीं की जा सकती। फैमिली लाइफ़ में भी यह सब होता है, इसमें कठिनाईयाँ हैं, परेशानियाँ हैं और सख़्तियाँ हैं, सभी कुछ है। आप पूरी दुनिया में घूमिये, चक्कर लगाइये और दुनिया के सबसे ज़्यादा कामयाब व खुश लाइफ़ पार्टनर्स से बात कीजिए। उनकी ज़िन्दगी में भी आपको बहुत सी सख़्तियाँ नज़र आएंगी जिन्हें वह ज़िन्दगी में पीछे छोड़ते गये और खुद आगे बढ़ते गये हैं। यहाँ सबसे बड़ी बात कठिनाईयों को झेलना और सख़्तियों को बर्दाश्त करना है। आज बहुत सी फैमिलीज़ और लाइफ़ पार्टनर्स को देखकर ऐसा लगता है जैसे उनकी ज़िन्दगी की दीवार अब गिरी और तब गिरी, जबकि यह नाकामी की निशानी है। कामयाब ज़िन्दगी यह है कि ज़िन्दगी की दीवारों को गिरने न दिया जाए बल्कि उन्हें मज़बूत किया जाए और ज़िन्दगी में आने वाली परेशानियों और कठिनाईयों से लड़ा जाए लेकिन सवाल यह है कि कब तक ऐसा किया जाए ?

कठिनाईयाँ इन्सान की ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा हैं। कोई भी इन्सान इन से बच नहीं सकता, इसलिए कमाल यह है कि इनका सामना किया जाए, इन्हें बर्दाश्त किया जाए और इन से लड़ा जाए ताकि इन्सान क्राइसेस में फंस कर खुद को ख़त्म न कर दे। ज़िन्दगी की बहुत सी कठिनाईयाँ सिर्फ़ फैमिली लाइफ़ में सामने आती हैं जैसे कभी पैसा नहीं होता, कभी किसी चीज़ की कमी होती है, कभी रिश्तेदार अच्छे नहीं होते, कभी लड़ाईयाँ भी हो जाती हैं और इस तरह की दूसरी परेशानियों से इन्सान का सामना होता है। अब सवाल यह है कि इन परेशानियों और कठिनाईयों के सामने इन्सान को क्या करना चाहिए और कब तक ?

इसके बारे में लोगों की सोच अलग-अलग है।

कुछ लोगों का मानना है कि सख़्तियों को बर्दाश्त करना चाहिए क्योंकि यह सबकी ज़िन्दगी में आती हैं। कोई इन से बच नहीं

सकता। ज़िन्दगी जीने के लिए हर चीज़ से लड़ना ज़रूरी है। परेशानियों से भागना या उनके सामने घुटने टेकना कोई कमाल नहीं है। इस से इन्सान का कान्फ़ीडेंस बिल्कुल ख़त्म हो जाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि लोगों के अन्दर बर्दाश्त करने की ताक़त एक जैसी नहीं होती। एक औरत जब तक यह समझती और महसूस करती है कि उसका लाइफ़ पार्टनर अच्छा है, उस से मोहब्बत करता है और उसके साथ खड़ा है तो उसे भी परेशानियों में उसका साथ देना चाहिए और उनका मुकाबला करना चाहिए।

एक औरत छोटी-छोटी बातों पर तलाक़ लेने के बारे में सोचती थी। उसके शौहर ने एक दिन उस से कहा: ज़िन्दगी तुम्हारी है तुम जो भी फैसला करोगी मैं तुम्हारे साथ हूँ। फिर जब उसने ठण्डे दिमाग़ से सोचा तो वह इस नतीजे पर पहुँची कि शौहर के बग़ैर वह अधूरी है, उसका शौहर उस से मोहब्बत करता है और वह शौहर से मोहब्बत करती है। इसलिए उसने हर मुश्किल से लड़ना शुरू किया और हर परेशानी को बर्दाश्त करने लगी जिसका रिज़ल्ट यह निकला कि



ज़िन्दगी आसान हो गई।

एक आलिम से इसके बारे में पूछा गया तो उन्होंने पूछा: एक औरत जब प्रेग्नेन्ट होती है तो वह क्या करती है? क्या उसके लिए बच्चे को पेट में उठाए रखना, उसे इधर-उधर लिये फिरना, इस हालत में काम करना सख्त होता है या आसान? क्या वह इस पीरियड में सख्तियों को बर्दाश्त करती है

और अपनी ख्वाहिशों को पूरा करना नहीं था। उनके लिए खाना-पीना, कपड़े, आराम, आसानियाँ, बड़ा बनना या पैसा इकट्ठा करना कोई बड़ा काम नहीं था। बल्कि उनकी ज़िन्दगी का एंगल यह था कि ज़िन्दगी खुदा की इबादत और उसकी इताअत में गुज़ारी जाए। इसलिए उन्होंने ज़िन्दगी में हर तरह की मुश्किल बर्दाश्त की। आज ज़िन्दगी का मक़सद दुनिया, ख्वाहिशें और आसानियाँ हैं इसलिए इन्सान कठिनाईयों को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है बल्कि जहाँ ज़रा सी परेशानी आई उसका मिज़ाज बिगड़ जाता है और वह फ़ैमिली की दीवारों को गिराने के बारे में सोचने लगता है।

खुदा सूरए बलद की आयत-4 में फ़रमाता है: “इन्सान को सख्ती में पैदा किया गया है।” इस सख्ती का नतीजा यह होगा

मैदान है, यहाँ सख्तियों से लड़ना और कठिनाईयों से जंग करना है। इसलिए ज़िन्दगी को समझने, दुनिया की हकीकत को जानने और फिर इसके लिए कोशिश करने की ज़रूरत है। फ़ैमिली लाइफ़ में परेशानियाँ कई तरफ़ से आती हैं। इसलिए इन से मिल कर निपटना है और ज़िन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाना है।

लाइफ़ पार्टनर की बहुत सी ग़लतियों और फ़ैमिली लाइफ़ की बहुत सी सख्तियों जैसे इग्नोर होना, शौहर का नशा करना, मारपीट वगैरा को बर्दाश्त करना बहुत मुश्किल काम है लेकिन बहुती सी औरतें इस तरह की चीज़ों को भी बर्दाश्त करती हैं और

या बच्चा गिरा देती है? वह सारी सख्तियाँ झेलती है क्योंकि उसे पता है कि इन सख्तियों के बाद जब बच्चा दुनिया में आएगा तो वह उसकी ज़िन्दगी का सुकून बनेगा और उसे देखकर जो खुशी उसे महसूस होगी उसके सामने यह सख्तियाँ कुछ भी नहीं हैं। अगर फ़ैमिली लाइफ़ में हमारे सामने एक बड़ा मक़सद होगा तो उस मक़सद को पाने के लिए वह सख्तियाँ उन दोनों के लिए आसान हो जाएंगी। अगर ज़िन्दगी का मक़सद खुदा होगा, उसे राज़ी करना होगा, उसकी इताअत में ज़िन्दगी का हर लम्हा बिताना होगा तो इन्सान सभी सख्तियों को बर्दाश्त करेगा। खुदा कूरआन करीम में बहुत सी आयतों में इन्सान को सब्र करने की नसीहत फ़रमाता है जैसे सूरए आले इमरान की आयत-200 में फ़रमाता है, “ऐ ईमान वाले! कठिनाईयों के सामने डटे रहो।”

हम ज़िन्दगी को किस एंगल से देखते हैं यह बहुत अहम है। हज़रत अली[ؓ] और हज़रत फ़ातिमा[ؓ] की ज़िन्दगी को जब हम देखते हैं तो उनकी ज़िन्दगी का एंगल दुनिया

कि इन्सान अपनी सलाहियतों का इस्तेमाल करेगा और इसके ज़रिये उसके अन्दर का खज़ाना बाहर आएगा। अगर कोई दुनिया के बारे में यह सोचे कि दुनिया आसानियों की जगह है और यहाँ ज़िन्दगी के लिए किसी तरह की कोई परेशानी और सख्ती नहीं होना चाहिए तो यह सोच कर उसने अपने दिमाग़ में एक बहुत बड़ी मुसीबत पाल ली है और उसके सामने बड़ी-बड़ी मुसीबतें आने वाली हैं। दुनिया लड़ाई का मैदान है, जंग का

ज़िन्दगी को बिखरने नहीं देती लेकिन कुछ के लिए ज़रा सी ग़लती बर्दाश्त करना और सख्ती का सामना करना इतना मुश्किल होता है कि वह फ़ौरन तलाक़ की बात करती हैं और इसी को मुश्किल का सॉल्यूशन समझती

हैं। हाँ! यह सवाल भी बड़ा है कि क्या लाइफ़ पार्टनर की हर बुरी आदत और ग़लती को बर्दाश्त या माफ़ करना चाहिए ?

अगर लाइफ़ पार्टनर के अन्दर कोई ऐसी आदत और बुराई पाई जाती है जिसे ठीक किया जा सकता है तो उसे बर्दाश्त करके माफ़ कर देना चाहिए और उसे ठीक करने का रास्ता ढूँढना चाहिए। माफ़ करना सख़्त

और परेशानी का शिकार है तो यहाँ दूसरे पार्टनर को डॉक्टर का रोल निभाना होगा। हज़रत अली^{१०} जब इस्लाम की तबलीग़ के लिए यमन जाना चाहते थे तो अल्लाह के रसूल^{१०} ने उन से फ़रमाया था, “अली! अगर तुम ने एक इन्सान को भी सही रास्ता दिखा दिया तो उसकी कीमत सूरज की उस रौशनी से कहीं ज़्यादा है जो इस ज़मीन को और इस पर रहने वाली हर चीज़ को ज़िन्दगी देती है।”

इसलिए हम बहुत से लोगों को देखते हैं कि वह अपने या अपनी लाइफ़ पार्टनर के साथ खड़े रहते हैं और उसे बर्दाश्त करते रहते हैं, इसलिए नहीं कि वह मजबूर होते हैं बल्कि इसलिए क्योंकि उन्हें सामने वाले में सुधार की उम्मीद होती है और वह उसके लिए कोशिश भी करते हैं।

मजबूरी है।

अगर मियाँ-बीवी दोनों अच्छे और नेक हैं और उन्हें एक-दूसरे की तरफ़ से कोई प्रॉब्लम नहीं है बल्कि जितनी भी प्रॉब्लम्स उनकी ज़िन्दगी में हैं वह बाहर से हैं, रिश्तेदारों की तरफ़ से, लोगों की तरफ़ से, दुश्मनों की तरफ़ से हैं तो वह मिलकर उनका मुकाबला करेंगे और एक साथ खुशियों का रास्ता तय करेंगे। अगर खुद उनके अन्दर प्रॉब्लम है तो वह एक दूसरे की मदद करेंगे और उसे दूर करेंगे। यह काम भी बहुत अच्छा है लेकिन अगर उनकी नज़र में कोई मक़सद नहीं है और न ही वह एक-दूसरे के सुधार के लिए सख़्तियाँ झेल

काम है लेकिन एक छत के नीचे रहने वाले लोगों के लिए ज़रूरी है कि एक-दूसरे को माफ़ करते रहें। शादी करने के बाद एक साथ रहने वाले दो लोगों की ज़िम्मेदारी है कि एक-दूसरे की मदद करें, एक-दूसरे की कमियों को दूर करें और एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर कामयाबियों की तरफ़ क़दम बढ़ाएं।

अगर किसी औरत का शौहर नशा करता है तो उसे क्या करना चाहिए ? तलाक़ लेकर अलग हो जाना चाहिए या नशा छुड़वाने में उसकी मदद करना चाहिए ? यहाँ तलाक़ का नुक़सान औरत को भी है और मर्द को भी। औरत अकेली हो जाएगी और मर्द पहले से ज़्यादा नशे की दलदल में फंसता चला जाएगा लेकर अगर दोनों मिलकर प्रॉब्लम का हल ढूँढने की कोशिश करेंगे तो ज़िन्दगी अच्छी हो जाएगी।

अगर एक इन्सान बीमार है तो उसके साथ क्या करना चाहिए ? उसे छोड़ देना चाहिए या उसका इलाज करना चाहिए ? अगर किसी का लाइफ़ पार्टनर किसी बुराई और बुरी आदत में फंसा है, किसी मुश्किल

एक डॉक्टर की इयूटी है कि जब तक बीमार का इलाज हो सकता हो वह उसका इलाज करता रहे लेकिन जब बिल्कुल मायूस हो जाए तो फिर उसे उसके हाल पर छोड़ दे। मियाँ-बीवी के लिए जब तक एक साथ चलना और आपस में साथ निभाना मुमकिन हो उन्हें कोशिश करते रहना चाहिए। जब बिल्कुल कोई रास्ता और इलाज न रह जाए तो फिर खुद ने तलाक़ का रास्ता खुला रखा है लेकिन यह इलाज नहीं बल्कि सिर्फ़

रहे हैं बल्कि उनका मक़सद सिर्फ़ अपनी साख़ बचाए रखना, अपनी नाक बचाए रखना और खुद को बहुत अच्छा जताना है तो सख़्तियाँ झेलने और एक-दूसरे को बर्दाश्त करने का कोई फ़ायदा नहीं है। ●



हक़ पर कौन है ?

आयतुल्लाह शहीद मुर्तजा मुतह्हरि

हम जब हिस्ट्री में सलमान फारसी, अबूज़र गफ़ारी, मिक्दाद, अम्मार यासिर और इसी तरह के लोगों के बारे में पढ़ते हैं और यह जानना चाहते हैं कि ऐसा क्या हो गया था कि इन लोगों ने दूसरे बहुत सों को छोड़ कर हज़रत अली^{अ०} का रास्ता चुन लिया था और उनका हाथ थाम लिया था ? तो हम पाते हैं कि यह सब ऐसे लोग थे जो उसूल के पाबन्द भी थे और उसूलों को जानने वाले भी, दीनदार भी थे और दीन का इल्म रखने वाले भी। इन लोगों का मानना था कि हमें अपनी अक्ल और सोच को दूसरों का गुलाम नहीं बनाना चाहिए। इन लोगों की नज़र में यह बिल्कुल सही नहीं था कि जब दूसरे ग़लती करें तो यह भी ग़लती करें। हकीकत में उन लोगों की रूह ही ऐसी थी जिस पर सिर्फ़ उसूल और हकीकत का हुक्म चलता था, दूसरे किसी का भी नहीं!

हज़रत अली^{अ०} के सहाबियों में से एक आदमी जंगे जमल के बारे में बहुत ज़्यादा शक में फंसा हुआ था। वह दोनों तरफ़ देखता था और दोनों तरफ़ के बड़ों को एक-दूसरे से मिलाता था। एक तरफ़ हज़रत अली^{अ०} को देखता था और उन सहाबियों को

जो हज़रत अली^{अ०} के साथ थे और अपने सामने वालों के खिलाफ़ तलवारें खींचे हुए थे। दूसरी तरफ़ अल्लाह के रसूल^{स०} की बीवी हज़रत आयशा को देखता था तो उसे कुरआन की बात याद आ जाती थी कि कुरआन पैगम्बर^{स०} की बीवियों के बारे में कहता है, “उस (रसूल) की बीवियाँ उम्मत की माएं हैं।” वह हज़रत आयशा के साथ तलहा को देखता था जो पहले ईमान लाने वालों में से था, जो एक बहुत अच्छा आदमी था, जो इस्लामी जंगों का माहिर सिपाही था, जिसने इस्लाम की बहुत ख़िदमत की थी और फिर जुबैर को देखता था जो तलहा से भी अच्छा था, वह उन लोगों में शामिल था जिन्होंने सकीफ़ा के दिन हज़रत अली^{अ०} के घर में पनाह ली थी।

इसलिए वह आदमी बड़ा परेशान था कि यह सब क्या हो रहा है? वह सोच रहा था कि हज़रत अली^{अ०}, तलहा और जुबैर पहले इस्लाम लाने वालों में और इस्लाम के लिए क़ुर्बानी देने वालों में से हैं, अब वह एक-दूसरे के मुक़ाबले में क्यों खड़े हैं? इनमें कौन हक़ के ज़्यादा क़रीब है?

इस उलझन में क्या करना चाहिए? याद रखिये! इस हैरान और परेशान आदमी को बुरा नहीं कहना चाहिए। शायद अगर हम भी उन हालात में होते जिन में वह था तो जुबैर और तलहा के पिछले वाले काम और उनकी पिछली ज़िन्दगी हमारे लिए भी बहुत

से सवाल खड़ा कर देती।

आज जब हम हज़रत अली^{अ०} या अम्मार यासिर व उवैसे क़रनी और दूसरे लोगों को... जुबैर व तलहा जैसे लोगों के मुक़ाबले में देखते हैं तो हम शक में नहीं पड़ते क्योंकि हम बात अच्छी समझते हैं कि दूसरे ग्रुप के लोगों के माथे पर जुर्म और जुल्म के निशान साफ़ नज़र आते हैं यानी उनके चेहरे से जुर्म साफ़ तौर पर दिखाई देता है लेकिन अगर हम उस ज़माने में होते और जो ख़िदमत उन्होंने की है उसे क़रीब से देखते तो शायद शक में पड़े बग़ैर नहीं रह सकते थे।

आज जब हम पहले ग्रुप को हक़ पर और दूसरे ग्रुप को बातिल पर मानते हैं तो इसकी वजह यह है कि हिस्ट्री में बयान होने वाले हालात के नतीजे में और असलियत को समझ जाने के बाद एक तरफ़ हज़रत अली^{अ०} और अम्मार यासिर जैसे लोग और दूसरी तरफ़ जुबैर व तलहा जैसे लोगों को हम ने पहचान लिया है। अब हम इस काबिल हो गये हैं कि इस बारे में सही फ़ैसला कर सकें या कम से कम अगर हम खुद हिस्ट्री में रिसर्च और स्टडी नहीं कर सकते तो बचपन से हमें इसी तरह समझाया गया है लेकिन हज़रत अली^{अ०} के जमाने में इन दो में से कोई वजह उन लोगों के सामने नहीं थी।

बहरहाल वह आदमी हज़रत अली^{अ०} के पास आकर बोला: “क्या यह हो सकता है कि तलहा व जुबैर जैसे लोग बातिल पर

इकट्ठा हो जाएं? इन जैसे लोग यानी रसूलुल्लाह^{१०} के बड़े सहाबी किस तरह यह ग़लती कर सकते हैं। क्या यह लोग भी बातिल के रास्ते पर चल सकते हैं? क्या यह हो सकता है?

हज़रत अली^{१०} ने जवाब में ऐसी बात कही कि जिसके बारे में मिश्र के एक स्कॉलर डॉक्टर ताहा हुसैन कहते हैं: इस से ज़्यादा बड़ी बात हो ही नहीं सकती, बल्कि वही का चिराग़ बुझ जाने और आसमानी परवाज़ के बन्द होने के बाद इतनी बड़ी बात कभी नहीं सुनी गई है।

अली^{१०} ने उसके जवाब में फ़रमाया था: “तुम्हें धोखा हुआ है और हकीकत की पहचान में तुम से ग़लती हुई है। हक़ और बातिल को लोगों की पर्सनॉलिटी और उनकी बुजुर्गी की कसौटी पर नहीं परखा जा सकता। यह बात ग़लत है कि तुम पहले बड़े लोगों को कसौटी बनाओ और उसके बाद हक़ और बातिल को उन कसौटियों से परखो, और यह कहो कि फुल्लों चीज़ हक़ है क्योंकि फुल्लों उसके साथ है और फुल्लों चीज़

बातिल क्योंकि फुल्लों-फुल्लों उसके साथ नहीं हैं। नहीं! हक़ और बातिल की कसौटी लोगों को नहीं बनाया जाना चाहिए बल्कि इसके उलट हक़ और बातिल को लोगों की कसौटी बनाया जाना चाहिए।”

यानी तुम्हें चाहिए कि पहले हक़ और बातिल को पहचानो और फिर उसके हिसाब से चलो, लोगों की पर्सनॉलिटी को देख कर मत चलो। बड़े लोग हों या छोटे लोग, सबको हक़ की कसौटी पर परखो। अगर हक़ पर पूरा उतरें तो उन्हें अच्छा मान लो और अगर ऐसा न हो तो उन्हें छोड़ दो। यह सवाल ही ग़लत है कि क्या तलहा व जुबैर जैसे लोग बातिल पर हो सकते हैं या नहीं।

यहाँ हज़रत अली^{१०} ने खुद हक़ और हकीकत को हक़ और हकीकत की कसौटी बताया है। इस्लाम और अहलेबैत^{१०} के मज़हब की रूह भी यही है इसके अलावा और कुछ नहीं है। हकीकत में शिया फ़िरक़े की बुनियाद भी यही है यानी शिया इस्लामी उसूलों को अहमियत देने की वजह से ही शिया हैं, बड़े लोगों, बड़ी पर्सनॉलिटीज़ और

बड़े सहाबा को मानने की वजह से नहीं। शियों की शुरुआत ही यहीं से हुई है कि उन्होंने किसी बड़े को मानने के बजाए हक़ को माना है और किसी बड़े पर ईमान के बुत को तोड़ दिया है।

अल्लाह के रसूल^{१०} के बाद एक तरफ़ तैंतीस साल के जवान हज़रत अली^{१०} थे जिनके साथ उंगलियों की तादाद से भी कम लोग थे और उनके सामने साठ साल के एक दूसरे सहाबी थे जिनके साथ बहुत ज़्यादा लोग थे। अकसरियत की सोच यह थी कि हमारे बड़ों का रास्ता यही है और बड़े ग़लती नहीं करते और हम भी उनके रास्ते पर चलने वाले हैं। लेकिन कुछ बहुत थोड़े लोगों का मानना यह था कि हक़ पर सिर्फ़ वही है जो ग़लती नहीं करता। बड़ों के लिए भी ज़रूरी है कि खुद को हक़ के साथ जोड़ें और उसी के मुताबिक़ चलें।

यहाँ से पता चल जाता है कि ऐसे लोग कितने ज़्यादा हैं जो रस्मों के हिसाब से तो शिया हैं लेकिन उन में शियों की रूह बिल्कुल नहीं है। ●

कोविड-19

इन्सानी जानों को बचाना शरीअत का एक बुनियादी उसूल है। इसीलिए कभी कभी इन्सानी ज़िन्दगी और इन्सानी हकूक़ का बचाव कुछ वाजिब मज़हबी अहक़ाम से भी ज़्यादा ज़रूरी हो जाती है।

अल्लाह के रसूल^{१०} और अहलेबैत^{१०} ने लोगों को महामारी जैसे ख़तरे से निपटने के लिए भी ख़ास तौर से रास्ता दिखाया है। Quarantine, एक-दूसरे से दूर रहना (सोशल डिस्टेंसिंग), सफ़र न करना, नमाज़ जमाअत पर पाबन्दी जैसे ज़रूरी काम किसी भी महामारी को रोकने के लिए ही बताए गए हैं।

सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई और आयतुल्लाह सीस्तानी या दूसरे मराजे कराम के आफ़िस ने कोरोना नाम की इस भयानक महामारी के इस दौर में डॉक्टरों और मेडिकल साइंस के जानकारों की गाइड-लाइन पर चलने के लिए बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है।

आयतुल्लाह सिस्तानी के आफ़िस ने नमाज़ जमाअत और जुमे की नमाज़ के बारे में कहा है कि कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने के लिए जहाँ भी इस तरह के प्रोग्राम करने के लिए मना किया गया है, वहाँ-वहाँ इस गाइड-लाइन को सन्जीदगी से लिया जाना चाहिए।

इस तरह की हर एहतियात और इलाज के साथ साथ हमें

अल्लाह से दुआ करना भी नहीं भूलना चाहिए।

अल्लाह ने कुरआन में कहा है, “मुझ से से दुआ मांगो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा।”

कुरआन में हज़रत इब्राहिम^{१०} की ज़बानी कहा गया है, “जिसने मुझे पैदा किया है, वही मुझे रास्ता भी दिखाता है। वही खाना देता है और वही पानी पिलाता है। और जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो वही मुझे ठीक भी करता है।

(सूरए शोअरा/78-80)



ज़िन्दगी एहतेराम के साए में

इस्लामिक लाइफ़ स्टाइल में एक बड़ी चीज़ “दूसरों का एहतेराम” है जिसे जानने और सीखने की ज़रूरत है। हो सकता है कि कुछ लोग यह कहें कि यह तो कोई सीखने वाली चीज़ नहीं है, हम रोज़ ऐसा ही करते हैं। शायद देखने में ऐसा ही लगता हो लेकिन समझने की कोशिश की जाए तो ज़रूरी नहीं कि असलियत में वैसा ही हो जैसा हम सोच रहे हैं।

दूसरों के एहतेराम के लिए सबसे पहले इसी बात की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है कि वह दूसरा आदमी है और दूसरा ज़रूरी नहीं हमारी तरह ही हो बल्कि उसकी सोच, मिज़ाज या साइकोलोजी हम से अलग बल्कि काफी अलग हो सकती है। इसलिए दूसरों के साथ किसी भी बर्ताव के लिए इन चीज़ों का ध्यान ज़रूरी होता है। आपके साथ भी ऐसा ज़रूर हुआ होगा कि एक आदमी को देख कर उसके बारे में आप जिस तरह सोचती हैं, उसके घर, कमरे, चीज़ों, सलीक़े और शौक़ को देखकर आपको यकीन नहीं होता कि वह आदमी ऐसा भी हो सकता है।

इंसानों के बीच इस फ़र्क़ को खुदा ने क़ुरआन में बताते हुए कहा है कि हम ने तुम्हें अलग-अलग

कौमों और क़बीलों में, रंगों और ज़बानों में और तरह-तरह के तौर-तरीकों के हिसाब से ज़िन्दगी में बाँटा है ताकि इसके ज़रिये तुम्हें आजमाएँ। यह फ़र्क़ नेचुरल फ़र्क़ है, बस इसे समझना है।

दूसरों के अक़ीदे और धर्म की रेस्पेक्ट

यह नारा आपने कई लोगों की ज़बान से सुना होगा और शायद आप ने भी कई बार लगाया हो, “दूसरों के अक़ीदे और सोच की रेस्पेक्ट करना चाहिए”। नारा अच्छा है और होना भी चाहिए लेकिन इस से बहुत से लोग ग़लत मतलब निकालते हैं और ग़लत फ़ायदा उठाते हैं। कुछ लोग यह मतलब निकालते हैं कि हमें हर एक के अक़ीदे को मानना चाहिए और अगर हम नहीं मानते तो बिल्कुल चुप रहना चाहिए। इस में कोई शक़ नहीं कि क़ुरआन के हिसाब से खुदा ने इन्सान को सही और ग़लत के बारे में बता दिया है और आज़ादी व इख़्तियार भी दिया है कि चुनाव उसी को करना है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इन्सान पूरी तरह अपनी मर्ज़ी का मालिक है कि वह जो चाहे या जैसा चाहे कर सकता है। दोनों रास्तों को दिखाने का मतलब ही यह है कि इन्सान ग़लत रास्ते का चुनाव न करे बल्कि सही रास्ता चुने। दूसरों के अक़ीदे के एहतेराम का मतलब यह है कि उन्हें किसी भी अक़ीदे को अपनाने के लिए मजबूर न किया जाए और उनके अक़ीदे का मज़ाक़ न उड़ाया जाए। जहाँ तक हो सके ग़लत अक़ीदों को अपनाने की सूरत में उन्हें बताया

और समझाया जाए कि सही क्या है और ग़लत क्या है, हक़ क्या है और बातिल क्या है।

दूसरों के सलीक़े का एहतेराम

अक़ीदा इन्सान की ज़िन्दगी में बहुत अहम रोल निभाता है और इन्सान की असली कामयाबी और नाकामी पर बहुत गहरा असर डालता है लेकिन इसके बाद भी खुदा किसी को इजाज़त नहीं देता है कि वह किसी दूसरे इन्सान से आज़ादी और इख़्तियार छीनने की कोशिश करे। अब आप खुद ही सोचिए कि जब खुदा इतनी बड़ी चीज़ के लिए दूसरों के अक़ीदे के एहतेराम को ज़रूरी समझता है तो वह चीज़ें जिनका इन्सान की सआदत से कोई रिश्ता नहीं है (जैसे हमारे घर के पर्दे और सोफ़े का रंग) क्या उनके लिए दूसरे के एहतेराम का लिहाज़ रखे बग़ैर ज़बरदस्ती की इजाज़त दे सकता है? एक फैमिली में अगर बीवी शौहर से या शौहर बीवी से कहे: हम वहाँ चलेंगे जहाँ हमारी मर्ज़ी होगी, खाना वह पकेगा जो मुझे पसन्द होगा, क़ालीन का रंग मेरी च्वाइस का होगा और इस तरह की दूसरी चीज़ें, आप खुद ही फ़ैसला कीजिए कि क्या इस ज़िन्दगी में मोहब्बत और मिठास होगी? हमारे बहुत से झगड़ों, नाराज़गियों और दूरियों की वजह यही होती है कि हम दूसरों पर अपनी मर्ज़ी और अपना सलीक़ा थोपना चाहते हैं। बहुत सी ग़लत फ़हमियों और एक-दूसरे से दूरी की वजह यह है कि हम यह नहीं जानते कि खुदा ने हमें तरह-तरह

के सलीकों के साथ पैदा किया है। इमाम सादिक^{अ०} फरमाते हैं: “अगर लोग जानते कि खुदा ने उन्हें कैसा बनाया है तो कोई भी दूसरे को बुरा न कहता।” इसलिए अगर हम यह चाहते हैं कि लोग हमारे पसन्द-नापसन्द का एहतेराम करें तो हमें यह भी पता होना चाहिए कि लोग भी हम से यही उम्मीद रखते हैं।

दूसरे के हक का एहतेराम

पूरे कूरआन में हमें जगह-जगह दूसरे के राइट्स दिखाई देंगे। जैसे लोगों के साथ एहतेराम के साथ बोलना, उनका मज़ाक उड़ाने से बचना, दूसरों को बुरे नामों से न पुकारना और इस तरह के बहुत से राइट्स जिनका एहतेराम और उनका ध्यान रखना हमारे लिए ज़रूरी है। खुदा ने माँ-बाप, बच्चों, यतीमों, अज़ीजों, रिश्तेदारों वगैरा के राइट्स हम पर वाजिब किये हैं। इसी तरह अगर हम हदीस की दुनिया में जाएं तो बहुत ज़्यादा छोटे-बड़े राइट्स, यहाँ तक कि जानवरों और पेड़-पौधों के राइट्स भी बयान किये गये हैं। इसकी एक मिसाल इमाम सज्जाद^{अ०} की ज़बानी बयान किये गये राइट्स हैं। हम में से मुमकिन है हर एक का कोई न कोई हक मारा गया हो, ऐसे में हमें क्या करना चाहिए? इसके लिए इमाम सज्जाद^{अ०} फरमाते हैं, “वह आदमी जिसने अपनी ज़बान या अमल से तुम्हारे साथ बुरा किया है उसका हक यह है कि अगर उसने जानबूझ कर भी ग़लती की है तो तुम उसे माफ़ कर दो ताकि कीना तुम्हारे दिल से निकल जाए, क्योंकि खुदा फ़रमाता है: “अगर सज़ा भी देना चाहते हो तो उतनी ही दो जितना तुम पर जुल्म हुआ है और अगर सब्र करते हो तो यह तुम्हारे लिए सबसे अच्छा है।” यह तब है जब सामने वाला जानबूझ कर ग़लत करे। अगर उस ने जानबूझ कर नहीं किया बल्कि अंजाने में ऐसा हुआ है तो उस से बदला लेने की कोशिश न करना, उस पर जुल्म न कर बैठना बल्कि बहुत नमी और हमदर्दी के साथ पेश आना।” ●

इमामे ज़माना^{अ०}

की एक दुआ



اللَّهُمَّ ارْزُقْنَا تَوْفِيقَ الطَّاعَةِ
وَبُعْدَ الْمَعْصِيَةِ وَصِدْقَ النَّيَّةِ وَعِرْفَانَ الْحُرْمَةِ وَآكْرَمُنَا
بِالْهُدَى وَالْإِسْتِقَامَةِ وَسَدِّدِ السِّنَنَ بِالصَّوَابِ وَالْحِكْمَةَ وَأَمْلَأْ قُلُوبَنَا
بِالْعِلْمِ وَالْمَعْرِفَةِ وَطَهِّرْ بَطْنَنَا مِنَ الْحَرَامِ وَالشُّبْهَةِ، وَاكْغِفْ أَيْدِينَا عَنِ الظُّلْمِ
وَالسَّرِقَةِ وَاغْضُضْ أَبْصَارَنَا عَنِ الْفُجُورِ وَالْخِيَانَةِ وَاسْدُدْ أَسْمَاعَنَا عَنِ اللَّغْوِ وَالْغِيَةِ
وَتَفَضَّلْ عَلَيْنَا عِلْمَانَا بِالزُّهْدِ وَالنَّصِيحَةِ وَعَلَى الْمُتَعَلِّمِينَ بِالْجُهْدِ وَالرَّغْبَةِ وَعَلَى
الْمُسْتَمْعِينَ بِالِاتِّبَاعِ وَالْمَوْعِظَةَ وَعَلَى مَرْضَى الْمُسْلِمِينَ بِالشِّفَاءِ وَالرَّاحَةَ وَعَلَى مُوْتَاهِمٍ
بِالرَّأْفَةِ وَالرَّحْمَةِ وَعَلَى مُشَايخِنَا بِالْوَقَارِ وَالسَّكِينَةِ وَعَلَى الشَّبَابِ بِالْإِنَابَةِ وَالتَّوْبَةِ وَعَلَى النِّسَاءِ
بِالْحَيَاءِ وَالْعِفَّةِ وَعَلَى الْأَغْنِيَاءِ بِالتَّوَاضُّعِ وَالسَّعَةِ وَعَلَى الْفُقَرَاءِ بِالصَّبْرِ وَالْقَنَاعَةِ وَعَلَى الْغَزَاةِ
بِالنَّصْرِ وَالْغَلَبَةِ وَعَلَى الْأَسْرَاءِ بِالْخُلَاصِ وَالرَّاحَةِ وَعَلَى الْأُمَرَاءِ بِالْعَدْلِ وَالشَّفَقَةِ وَعَلَى الرُّعِيَّةِ
بِالْإِنْصَافِ وَحُسْنِ السَّيَرَةِ وَبَارِكْ لِلْحُجَّاجِ وَالزُّوَّارِ فِي الزَّادِ وَالنَّفَقَةِ وَأَفْضِ مَا أَوْجَبَتْ
عَلَيْهِمْ مِنَ الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ بِفَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ.

खुदाया हमें इताअत की तौफ़ीक़,
गुनाहों से दूरी, नियत में सच्चाई,
मोहतरम चीज़ों की पहचान अता
फ़रमा!

हमें हिदायत व मज़बूती से डटे
रहने की क़रामत अता फ़रमा!

हमारी ज़बानों को सच्चाई और
हिकमत के रास्ते पर लगा दे। हमारे
दिलों को इल्म व मारेफ़त से भर दे।

हमारे पेट को हराम और ग़लत
चीज़ों से पाक कर दे!

हमारे हाथों को जुल्म और चोरी
से रोक दे!

हमारी निगाहों को गुनाहों और
ख़यानत से बंद कर दे!

हमारे कानों को बेकार बातों और
गीबत से दूर कर दे!

हमारे उलमा को ज़ोहद व
नसीहत, मिलने जुलने वालों को
कोशिश व रग़बत और सुनने वालों
को बताई बातों पर चलने की

तौफ़ीक़ अता फ़रमा!

बीमार मुसलमानों को शिफ़ा व
राहत दे!

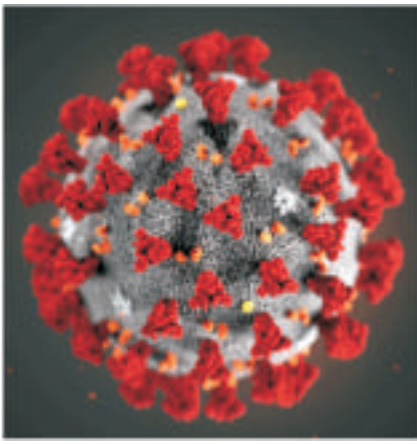
मरने वालों पर मेहरबानी और
रहमत फ़रमा। बुजुर्गों को वक़ार
और सुकून अता फ़रमा!

नौजवानों को तौबा व इस्तेग़फ़ार
और औरतों को हया व पाकीज़गी,
मालदारों को तवाज़ो और खुला
दिल, ग़रीबों को सब्र और क़नाअत,
मुजाहिदों को नुसरत और ग़लबा,
क़ैदियों को आज़ादी व राहत, अमीरों
को इंसाफ़ व मेहरबानी, आम लोगों
को इंसाफ़ और अच्छी सीरत की
तौफ़ीक़ अता फ़रमा!

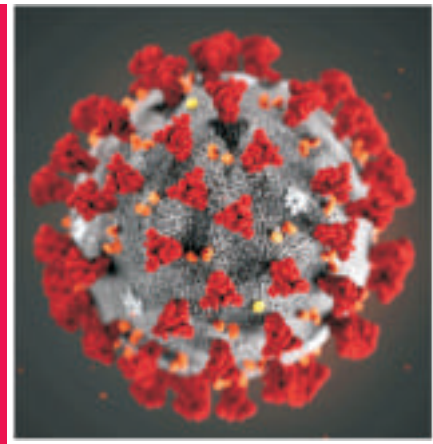
हाजियों व ज़ाएरों के ज़ादे राह
और नफ़के में बरकत अता फ़रमा!

जिस पर हज व उमरा वाजिब
किया है उसे अदा फ़रमा दे!

अपने फ़ज़ल से
ऐ अरहमर-राहिमीन



कोविड-19



कोरोना वायरस से जुड़ी कुछ खास जानकारियाँ

एहतियात बरतिए, डरिए मत!

कोरोना से जुड़ी अफवाहों से बचिए, सही जानकारी जुटाइए, खाँसी को दूर भगाइए, हाथों की सफाई और निजी देखभाल ध्यान रखिए और अपनी तरफ से एहतियात से जुड़ी जानकारी सही तरीके से दूसरों तक भी पहुँचाएँ।

क्या है कोविड-19 ?

कोविड-19 एक वायरल (फैलने वाली) बीमारी है, जो हाल ही में खोजे गये एक नये वायरस नोवल कोरोना वायरस की वजह से फैलती है।

कैसे फैलती है यह बीमारी ?

- जब इसका मरीज़ छींकता या खाँसता है तो उसकी छींक और लार की बहुत सारी बूँदें हवा में फैल जाती हैं या ज़मीन और आसपास की सतहों पर गिर जाती हैं।

- अगर कोई दूसरा आदमी छींकते या खाँसते वक़्त मरीज़ के पास खड़ा है या उन सतहों को छूता है जहाँ ये बूँदें फैली हुई हैं और फिर अपने हाथों से चेहरे, आँखों या मुँह को छू लेता है तो उसे भी यह बीमारी लग सकती है।

- अगर कोई आदमी किसी दूसरे बीमार आदमी से एक मीटर से कम दूरी के अंदर है तो यह बीमारी बहुत तेज़ी से फैल सकती है।

उस आदमी का क्या होता है जिसे यह बीमारी लग जाती है ?

- ज़्यादातर लोगों (80%) को किसी तरह के इलाज की ज़रूरत नहीं होती। यह लोग खुद ही ठीक हो जाते हैं।

- कुछ लोगों को (20%) को अस्पताल जाकर इलाज कराना पड़ता है।

- बहुत ही कम लोगों को आई.सी.यू. में इलाज कराने की ज़रूरत पड़ती है।

किस एज-ग्रुप में यह बीमारी फैलती है ?

क्या यह बीमारी बच्चों में भी होती है ?

- यह बीमारी सभी एज-ग्रुप्स में फैल सकती है।

- यह बीमारी घर में किसी मरीज़ के ज़रिए बच्चों में भी फैल सकती है।

- बच्चों में यह वायरस आमतौर पर हल्का होता है।

- बुजुर्ग लोग और ऐसे लोग जिन्हें पहले से ही हाई ब्लड-प्रेसर, अस्थमा, कैंसर, हार्ट या लीवर से जुड़ी बीमारियाँ हैं, उनमें यह बीमारी बहुत ही आसानी से फैल सकती है और बहुत ही ख़तरनाक भी हो सकती है।

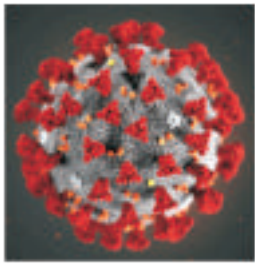
कोरोना वायरस किसी चीज़ पर कितने वक़्त तक एक्टिव रह सकता है ?

- इस बारे में अभी कोई सही अंदाज़ा नहीं है कि कोविड-19 वायरस किसी सतह पर कितनी देर तक एक्टिव रह सकता है। यह वायरस भी दूसरे कोरोना वायरसों की तरह ही होता है।

- रिसर्च से पता चलता है कि यह वायरस कुछ घंटों से कुछ दिनों तक बचा रह सकता है और यह पीरियड सतह के आकार-प्रकार और टम्प्रेचर पर डिपेंड करता है।

- अगर आपको यह लगता है कि किसी जगह या किसी सतह पर वायरस फैल गया है तो उसे





सेनेटाइज़ कर देना चाहिए और अपने साथ-साथ दूसरों को भी बचने में मदद करना चाहिए।

- अपने हाथों को अल्कोहल-बेस्ड लिक्विड से साफ़ करते रहना चाहिए या साबुन और पानी से धोते रहना चाहिए।

- अपनी आँखों, मुँह या नाक को छूने से बचना चाहिए।

ऐसा इसलिए है ताकि इस वायरस से अपने हाथों और चेहरे/मुँह/आँखों को बचाया जा सके।

इस बीमारी की पहचान क्या है?

इस बीमारी की यह निशानियाँ हैं:

- बुखार, गले में खराश, खाँसी और साँस की तकलीफ़।

- किसी भी वायरल बीमारी की निशानियाँ जैसे सर्दी लगना, नज़ला-जुकाम, इन्फ़्लूएंजा वगैरा

मुझे किससे सलाह लेनी चाहिए?

आप अपने फ़ैमिली डॉक्टर से सलाह लीजिए, अगर आपको साँस लेने में दिक्कत हो रही हो, और साथ ही नीचे लिखी बातों में से कोई भी ख़तरा हो तो,

- आप किसी ऐसी जगह से आए हों जहाँ कोरोना वायरस फैला हुआ हो।

- कोरोना वायरस से बीमार आदमी के साथ रहे हों।

कौन-कौन से टेस्ट किए जाना हैं और कहाँ

किया जाना है?

अगर खाँसी, बुखार या साँस लेने में कठिनाई हो रही है या फिर आपने किसी कोविड-19 के असर में आने वाले मुल्क का सफ़र किया है या आप किसी ऐसे आदमी के साथ रहे हैं जिस का कोविड-19 टेस्ट पॉज़िटिव आया है तो फ़ौरन स्टेट हेल्प लाइन या भारत सरकार के हेल्थ और फ़ैमिली वेलफ़ेयर मिनिस्ट्री के नम्बर पर कॉल कीजिए!

24X7 हेल्प लाइन: 011-23978046

टोल फ़्री नम्बर: 1075

हेल्प लाइन डेस्क आपकी कॉल डिटेल्स को नोट करेगा और कोविड-19 के टेस्ट प्रोटोकॉल के साथ आपसे कांटेक्ट करेगा। अगर आप प्रोटोकॉल के हिसाब से टेस्ट के लिए मुनासिब पाये जाते हैं तो सरकार के ज़रिए तय की गई लेबॉरेट्री में ही आप का टेस्ट किया जाएगा।

क्या कोरोना वायरस का कोई इलाज है?

- आज तक कोरोना वायरस (कोविड-19) के लिए कोई ख़ास इलाज नहीं ढूँढा जा सका है।



- चूँकि यह एक वायरल बीमारी है, इसलिए 80% से ज़्यादा मामलों में यह कुछ ही दिनों के अंदर ठीक हो जाता है।

- अगर किसी के अंदर गम्भीर बीमारी की निशानियाँ दिखाई दे रही हैं, तो उसे अस्पताल/आई.सी.यू. में दाख़िल कराने की ज़रूरत पड़ सकती है।

क्या कोरोना वायरस के इलाज के लिए कोई ख़ास दवाएं मौजूद हैं?

- नहीं! अभी तक इस बीमारी के लिए कोई खासएंटी-वायरल दवा नहीं ढूँढी जा सकी है। वैसे बहुत सारे लोग बिना किसी दवा के ही ठीक हो जाते हैं, जैसे दूसरी वायरल बीमारियों में भी ऐसा ही होता है।

- कुछ दवाएं जो दूसरी तरह के कोरोना वायरस के लिए इस्तेमाल की जाती हैं, उन्हें बहुत बीमार मरीज़ों में आजमाया जा रहा है।

मैं अपने और अपने घर वालों को कैसे बचा सकता हूँ?

हम कुछ एहतियात बरत कर कोविड-19 को फैलने से बचा सकते हैं:

- लगातार और अच्छी तरह से अपने हाथों को अल्कोहल-बेस्ड लिक्विड हाथ से रगड़ कर साफ़ करें या बाहर से आने के बाद साबुन और पानी से अपने हाथ धोएं।

- अगर कोई खाँस रहा है या छींक रहा है तो उससे कम से कम 1 मीटर (3 फीट) की दूरी बनाए रखें।

- आँखों, नाक और मुँह को छूने से बचें।

- इस बात का भी ध्यान रखिए कि आपके आसपास के लोग हेल्थ रिलेटेड डिसिपिलिन पर चल रहे हों। इसका मतलब यह है कि खाँसी या छींक आने पर अपनी मुड़ी हुई कोहनी या टिशू से अपने मुँह और नाक को ढकना। फिर इस्तेमाल किये गये टिशू को फ़ौरन ढके हुए कूड़ेदान में डाल दें।

- अगर आप बीमार महसूस कर रहे हों तो घर पर रहिए और अगर आपको बुखार, खाँसी या साँस लेने में कठिनाई हो, तो फ़ौरन अपने इलाज पर ध्यान दीजिए।

मास्क कैसे पहनना चाहिए?

जिन लोगों में इस बीमारी की कोई निशानी नहीं है उन्हें मास्क नहीं लगाना चाहिए। सेहतमंद लोगों को मेडिकल मास्क नहीं लगाना



SYMPTOMS OF CORONAVIRUS DISEASE

Patients with COVID-19 have experienced mild to severe respiratory illness

FEVER

Symptoms* can include

SHORTNESS
OF BREATH

COUGH

Symptoms may appear
2-14 days after exposure

चाहिए क्योंकि ऐसे करने से आदमी के अंदर हेल्थ सेक्योरिटी की झूठी उम्मीद जाग जाती है जिस से दूसरी ज़रूरी एहतियात छूट सकती है जैसे हाथ धोना।

इस बीमारी से बचने के लिए नीचे लिखे काम ज़्यादा कारगर होंगे :

1- 20 सेकंड के लिए साबुन और पानी से हाथों को बार-बार धोएं। 70% अल्कोहल-बेस्ड हैंड सैनिटाइज़र का 20 सेकंड के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। अगर हाथ गन्धे हैं तो अल्कोहल-बेस्ड हैंड सैनिटाइज़र का इस्तेमाल न करें बल्कि साबुन और पानी से हाथ धोएं।

2- खाँसते या छींकते वक़्त रुमाल और टिशू पेपर से नाक और मुँह ढकें। इस्तेमाल के फौरन बाद टिशू को हटा दें और हाथ धो लें। अगर रुमाल या टिशू पेपर नहीं है, तो कोहनी को मोड़कर उसमें खाँसें।

3- चेहरे, मुँह, नाक और आँखों को छूने से बचें।

4- खाँसने या छींकने वालों से कम से कम 1 मीटर दूर रहें।

5- अपने बदन के टम्प्रेचर की निगरानी करें।

हैंड सैनिटाइज़र का क्या रोल है?

- जब आप कोरोना वायरस से होने वाले किसी बीमार की देखभाल कर रहे हों तो हैंड सैनिटाइज़र का इस्तेमाल ज़रूर करें।

- आमतौर पर घरों/आफ़िसों में 20 सेकंड के लिए साबुन और पानी से हाथ धोना एक अच्छा इलाज है।

- अगर हाथ गन्धे हैं तो अल्कोहल-बेस्ड हैंड सैनिटाइज़र का इस्तेमाल न करें बल्कि साबुन और पानी से हाथ धोएं।

क्या कोरोना वायरस से बचने में खाने-पीने की चीज़ों का भी कोई रोल है?

किसी खास चीज़ के बारे में कुछ नहीं कहा गया है, हालांकि कोई

भी आदमी सेहतमंद रहने के लिए अपने नार्मल खान-पान जिसमें फल, सब्ज़ियाँ वगैरा शामिल हैं, ले सकता है।

क्या कोरोना वायरस के इलाज के लिए कोई टीका मौजूद है?

- अभी तक कोविड-19 बीमारी के इलाज के लिए कोई टीका नहीं है।

क्या है कोरोना के बारे में आम मिथ?

1- क्या यह बीमारी चिकन, अण्डे और गोشت खाने से फैलती है ?

इस बात का कोई सुबूत नहीं है कि ठीक से पका हुआ भोजन इस बीमारी को फैलाने में कारगर होता है।

2- क्या यह बीमारी पालतू जानवरों से फैलती है ?

पालतू जानवरों से इस बीमारी को फैलते नहीं देखा गया है।

3- क्या कोरोना वायरस से बीमार आदमी की लाश से भी यह वायरस फैलता है ?

मरे हुए आदमी के बदन से कोरोना वायरस नहीं फैलता है।

मैं इस बीमारी को रोकने में कैसे मदद कर सकता हूँ?

- साफ़-सफ़ाई से।

- लगातार हाथ धोते रहने से।

- खाँसी आने पर मुँह छुपाकर खाँसने से।

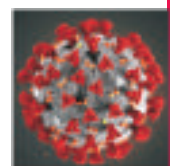
- कहीं आने-जाने से बचकर।

- किसी भी पब्लिक प्रोग्राम में न जाकर।

- सोशल-दूरी बनाकर।

- इस बीमारी को चेन को तोड़कर

(Courtesy: A booklet on Covid-19
published by AIIMS-New Delhi)



बच्चों के दीनदार या बेदीन बनने में माँ-बाप का रोल

■ मोहसिन सीमानी

परवरिश

अगर हम खुद से सच बोलने की हिम्मत रखते हों तो खामोशी ही के साथ सही मगर अपने दिल में इस बात को ज़रूर मानेंगे, खुद से कि हम ने सुस्ती से काम लिया है और जिस तरह से काम करना चाहिए था नहीं किया, वक्त नहीं दिया, जान नहीं लगाई, इसलिए हम उस तरह से बच्चों की परवरिश नहीं कर सके जिस तरह हम चाहते थे। इसी लिए बच्चों के बारे में हम ने बहुत सी ख्वाहिशों और आरजूओं को अपने या ज़माने के पैरों तले रौंद डाला। अगर हम खुद से सच कहें तो हमें यह बात मानना पड़ेगी कि हम ने प्लानिंग नहीं की, डिसिप्लिन के साथ नहीं चले, बेमक़सद आगे बढ़ते रहे, इसी लिए काम उस तरह नहीं हो सका जिस तरह होना चाहिए था। क्या हम सच में अपने साथ सीरियस हैं और सच बोलने की हिम्मत रखते हैं या अपनी ग़लतियों पर पर्दा डाल कर किसी तरह अपनी ग़लतियों को ठीक करने की कोशिश कर रहे हैं ?

हमारी पड़ोसन मर्ज़िया बाजी को ही ले लीजिए। वह हमेशा से चाहती थीं कि उनकी लड़की भी उन्हीं की तरह बने, हिजाब पहने, मजलिसों में जाए, दीनी प्रोग्रामों में हिस्सा ले, दुआ और क़ुरआन के प्रोग्रामों में हिस्सा ले और ऐसी बने-वैसी बने लेकिन अब जब ऐसा नहीं हो

सका तो वह अपनी ग़लती बिल्कुल नहीं मानती, यह नहीं मानती कि उन्होंने बेटी की परवरिश में सख़्ती से काम लिया, यह नहीं मानती कि उन्होंने बचपन में उस पर ज़रूरत से ज़्यादा बोझ डाला, यह नहीं मानती कि उन्होंने वहाँ ढील दी जहाँ नहीं देना चाहिए थी बल्कि सारा दोष वह नसीब का मानती हैं और कभी-कभी बड़ी सेक्युलर बन कर कहती हैं, “मैं क्या कर सकती हूँ, हर एक को अपना लाइफ़ स्टाइल अपनाने का हक़ है, मेरी बेटी को भी है..।” यह कोई बुरी बात नहीं है लेकिन इसके पीछे हकीक़त कुछ और है। मर्ज़िया बाजी की बेटी को जिस चीज़ ने गुमराह किया वह बस यही थी कि माँ-बाप का परवरिश करने का तरीका ठीक नहीं था। यह बात वह सभी लोग जानते थे कि उनका अपनी बेटी के साथ बर्ताव कैसा था।

यह कहानी सिर्फ़ मर्ज़िया बाजी की नहीं है बल्कि हमारे समाज के बहुत से माँ-बाप ऐसे ही हैं। बाप जितना दीनदार है बेटा दीन से उतना ही दूर, माँ पर्दा करती है लेकिन बेटी पर्दे से उतना ही भागती है।

अगर हम थोड़ा सोच-विचार करें और अपने आसपास नज़रें दौड़ाएं तो हमारे अड़ोस-

पड़ोस के बहुत से लोगों की यही प्रॉब्लम है। इस पर सोच-विचार इसलिए करना ज़रूरी है ताकि हम संभल जाएं और इस मुश्किल में न फँसें।

बच्चों के अन्दर पाई जाने वाली सभी बुराईयों और ग़लतियों में सिर्फ़ माँ-बाप को दोषी ठहराना भी सही नहीं है, लेकिन माँ-बाप के रोल से इनकार भी नहीं किया जा सकता। इस मसले में एक ख़ास बात यह है कि बच्चों के दीनदार बनने के लिए सिर्फ़ यही काफी नहीं है कि माँ-बाप दीनदार हों। आज मीडिया और इंटरनेट के इस ज़माने में जहाँ हज़ारों तरह के सवाल और एतेराज़ जवानों के ज़ेहनों में उभारे और डाले जाते हैं। इसलिए यह सोचना सही नहीं है कि हम दीनदार हैं इसलिए हमारे बच्चे भी दीनदार बन जाएंगे। यह भी सही नहीं है कि हम यह सोच कर अपने बच्चों को आज़ाद छोड़ दें और यह कहने लगे कि उन्हें रास्ता चुनने और उस पर चलने का राइट है क्योंकि इस से बच्चों को आज़ादी और राइट नहीं मिलेगा बल्कि यह चीज़ें बच्चों को एक ऐसे रास्ते की





तरफ़ ले जा सकती है जो गुलत रास्ता हो। इमाम सादिक^अ अपने साथियों से फ़रमाते हैं, “अपने बच्चों को हमारा दीन और हमारे अकीदे सिखाओ, इस से पहले कि मुर्जिया जैसे गुमराह लोग उन्हें अपनी तरफ़ मोड़ लें”।

इमाम की इस हदीस में सबसे खास बात यह है कि बच्चों को दीनदार बनाया जाए। इस लिए माँ-बाप को अपने बच्चों के दीन की फ़िक्र ज़रूर होना चाहिए और इसे बच्चों की ज़िन्दगी का एक बड़ा मसला समझ कर उसकी तरफ़ भरपूर ध्यान देना चाहिए। इस हदीस से दूसरी बात यह समझ में आती है कि जहाँ हमें बच्चों के दीन और ईमान के बारे में परेशान होना चाहिए वहीं उनकी दीनी परवरिश के लिए कोशिश भी करना चाहिए, लेकिन किस तरह? इसका तरीका यह नहीं है कि बच्चों को बस नसीहत कर दी जाए कि वह नमाज़ पढ़ें और दीनदार बनें बल्कि इसके लिए अच्छी तरह से उन्हें दीन सिखाने का इन्तेज़ाम करना ज़रूरी है। इमाम सादिक^अ की इस हदीस और आज के हालात को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि हमारे सामने दो रास्ते हैं जिनमें से किसी एक को अपनाना हमारे अपने कन्ट्रोल में है:

पहला तरीका यह है कि हम यह सोच कर आराम से बैठ जाएं कि हम दीनदार हैं इसलिए हमारे बच्चे भी अपने आप दीनदार बन जाएंगे। बहुत से घरानों में जवानों के अकीदों और ईमान में जो प्रॉब्लम्स पाई जाती हैं वह इसी सोच का नतीजा हैं। ऐसे घरानों के बच्चे अपने माँ-बाप के तरीके और रास्ते से या बिल्कुल हटे हुए हैं या अपने माँ-बाप की तरह रस्मी दीन पर चल रहे हैं जो बहुत कमज़ोर है। उनके पास दीन के

बारे में उठाए जाने सवालों और एतेराज़ों का कोई जवाब नहीं होता।

दूसरा तरीका यह है कि हम इस बात को अच्छी तरह जान और समझ लें कि हमारे दीनदार होने से हमारे बच्चे दीनदार नहीं बन जाएंगे बल्कि उनके दीनदार बनने और फिर दीनदार बने रहने के लिए ज़रूरी है कि हम पूरी तरह से उनका ध्यान रखें, उन्हें वक़्त दें, उनकी दीनी परवरिश का इन्तेज़ाम करें, इसके लिए पैसा ख़र्च करें, प्लानिंग और प्रोग्रामिंग के साथ उनकी परवरिश करें। यही सही तरीका है जिसकी दीन भी हिमायत करता है।

अगर हम बच्चों के बहकने और दीन से दूर होने में माँ-बाप की गुलती मानते हैं तो इसकी वजह यह है कि जब माँ-बाप बच्चों को उनके हाल पर छोड़ देते हैं और उनकी दीनी परवरिश की तरफ़ कोई ध्यान नहीं देते तो बहुत से गुमराह दुश्मन जो पहले से ही घात लगाए बैठे होते हैं वह उन्हें अपने जाल में फंसा लेते हैं, दीन से दूर करते हैं, दीन के नाम पर कुछ आसान और आम सी चीज़ों में बिज़ी करके उनके ईमान को खोखला कर देते हैं। इसलिए माँ-बाप को बहुत ज़्यादा ध्यान रखना चाहिए कि कोई उनके बच्चों को सीधे रास्ते से हटा कर गुलत रास्ते की तरफ़ न ले जाए, क्योंकि शैतान चारों तरफ़ फैले हुए हैं जो इन्सानों के दुश्मन हैं।

इसलिए ज़रूरी है कि...

बच्चों की दीनी परवरिश के लिए जानकार और दीनदार एक्सपर्ट्स से मशवरा लेते रहिये।

बच्चों को मकरूह मुस्तहब सिखाने के बजाए उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा वाजिब और हराम कामों के बारे में बताइए। इस्लामी अकायद,

इस्लामी अख़लाक़ और इस्लाम के बारे में उठने वाले सवालों और दुश्मनों की तरफ़ होने वाले एतेराज़ों के बारे में उनके साथ बात कीजिए।

दोस्तों और जिन लोगों के साथ बच्चों का उठना-बैठना होता है उनका बच्चों की ज़िन्दगी और पर्सनॉलिटी पर बहुत गहरा असर पड़ता है। इसलिए कोशिश करके उन्हें मस्जिद, नमाज़ जमाअत, दीनी प्रोग्रामों, किसी आलिम और अच्छे दीनदार दोस्तों की तरफ़ मोड़िए।

बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत डालिए क्योंकि किताबों से बहुत से सवालों का जवाब वह खुद पा सकते हैं और बहुत सी बातें खुद समझ सकते हैं।

अगर बच्चा कोई ऐसा सवाल पूछता है जिसका जवाब आपको नहीं मालूम है तो इसके बारे में खुद स्टडी करके या किसी आलिम से पूछ कर उसे जवाब ज़रूर दीजिए उसे टालने और जान छुड़ाने की कोशिश बिल्कुल न कीजिए।

नमाज़, दुआ, मजलिस और इबादत वगैरा के लिए बच्चों के अन्दर पाए जाने वाले हौसले व हिम्मत को ध्यान में रखते हुए ही उन से उम्मीद रखी जाए और उसी के मुताबिक़ उन पर ज़िम्मेदारी डाली जाए। इसके लिए किसी तरह की सख़्ती और ज़्यादा बोझ डालने से वह दीन से दूर हो सकते हैं।

आख़िर में यह भी कि जहाँ हम बच्चों की दीनी परवरिश के लिए और मेहनत कर रहे हैं वहीं उनकी हिदायत के लिए हमें खुदा से दुआ और अहलेबैत^अ से तवस्सुल भी ज़रूर करना चाहिए क्योंकि माँ-बाप की दुआ बच्चों की हिदायत में बहुत बड़ा रोल निभाती है। ●

شهر رمضان المبارك

खुदा का महीना आ रहा है

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब^अ ने फ़रमाया है: एक दिन अल्लाह के रसूल^अ ने हमारे सामने खुतबा देते हुए फ़रमाया, “ऐ लोगो! खुदा का महीना अपनी बाँहें फैलाए तुम्हारी तरफ़ बढ़ रहा है और बरकत, रहमत और मग़फ़िरत अपने साथ ला रहा है। यह महीना खुदा की नज़र में सबसे अच्छा महीना है। इसके दिन बेहतरीन दिन और इसकी रातें बेहतरीन रातें हैं, इसकी घड़ियाँ बेहतरीन घड़ियाँ हैं। इस महीने में तुम्हें खुदा का मेहमान बनाया गया है और खुदा की करामत का ताज तुम्हारे सर पर रखा गया है। तुम्हारी साँसें इसमें तसबीह, तुम्हारा सोना इबादत, तुम्हारे आमाल क़बूल और तुम्हारी दुआएं पूरी होने वाली हैं।”

खुदा का महीना

قد اقبل اليكم شهر الله

بالبركة والرحمة والمغفرة

यह महीना जिसे रमज़ानुल मुबारक कहा जाता है इसकी कई खास बातें हैं; इसकी सबसे खास बात यह है कि यह “खुदा का

महीना” है। इसकी दूसरी खास बात यह है कि यह अपनी बाँहें फैलाए इन्सानों की तरफ़ देखता हुआ उनकी तरफ़ बढ़ रहा है और उन्हें अपनी बाँहों में लेकर अपनी रहमतों, अपनी बरकतों और मग़फ़िरतों से नवाज़ना चाहता है। इसकी एक खास चीज़ यह है कि यह खुदा की नज़र में सबसे अच्छा महीना है। इसके दिन बेहतरीन, इसकी रातें बेहतरीन और इसकी घड़ियाँ बेहतरीन हैं।

खुदा की दावत

इस महीने में खुदा की तरफ़ से खास दावत का इन्तेज़ाम किया गया है। खुदा की तरफ़ से आम दावत दी गई है। जो भी आना चाहे आ सकता है और इस दस्तरख़्वान पर रखी हुई नेमतों से फ़ायदा उठा सकता है। दावत सबको दी जाती है लेकिन दुख की बात यह है कि सब लोग नहीं आते और सब लोग फ़ायदा नहीं उठाते। कुछ लोग इस दावत की तरफ़ ध्यान भी नहीं देते, उन्हें ख़बर भी नहीं होती कि कब रमज़ान आया और कब गुज़र गया, जैसे उनके लिए इस दावत में कुछ भी नहीं होता। कुछ लोगों को

इस दावत की ख़बर होती है लेकिन वह दुनिया की रंगीनियों में इतना बिजी होते हैं और दुनिया में इतना डूबे होते हैं कि खुदा की तरफ़ से बिछाए गये इस दस्तरख़्वान पर बैठना गवारा नहीं करते। उन्हें डर होता है कि अगर इस दस्तरख़्वान की किसी नेमत को इस्तेमाल कर लिया तो कहीं हाज़मा ख़राब न हो जाए।

जो लोग रमज़ान नाम की इस दावत में आते हैं और इस दस्तरख़्वान पर बैठते हैं वह भी सब एक जैसे नहीं होते। कुछ लोग थोड़ी देर के लिए बैठते हैं और थोड़ा सा चख कर उठ जाते हैं यानी इस महीने से बहुत कम फ़ायदा उठाते हैं। कुछ लोग ज़्यादा टाइम बैठने की और ज़्यादा नेमतों से फ़ायदा उठाने की कोशिश करते हैं और कुछ लोग जिन्होंने खुद को पहले से इस दावत के लिए तैयार किया होता है, जिन्हें इन्तेज़ार होता है इस दावत का, वह पूरे शौक के साथ आते हैं, अपना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त देते हैं, सब नेमतों से फ़ायदा उठाते हैं और कोशिश करते हैं कि मेज़बान की बुजुर्गी को

नज़र में रखते हुए और मौक़े को अच्छा समझते हुए जितना ज़्यादा हो सकता हो इस दावत से फ़ायदा उठाएं।

किस तरह की नेमतें ?

यहाँ सवाल यह है कि खुदा ने जो दावत दी है और ख़ास नेमतों का जो दस्तरख़्वान बिछाया है वह किस तरह की नेमतें हैं? शायद कोई यही समझे कि यह वही दुनियावी नेमतें और खाने-पीने की चीज़ें हैं जो सिर्फ़ रमज़ानुल मुबारक में खाई-पी जाती हैं या इस महीने में ज़्यादा खाई-पी जाती हैं। अगर कोई ऐसा समझता है तो वह ग़लती पर है क्योंकि इसके लिए किसी ख़ास इन्तेज़ाम की ज़रूरत नहीं है, यह काम तो हम साल भर करते हैं और खुदा के कहे बग़ैर करते हैं। हमारे यहाँ ज़्यादा एहतेमाम इन्हीं चीज़ों का होता है और खाने-पीने की वह ख़ास चीज़ें जो रमज़ान के महीने में खाई जाती हैं, अगर वह न हों तो लगता है जैसे रमज़ान ही नहीं है या फीका रमज़ान है।

खुदा ने जो दस्तरख़्वान बिछाया है वह दुनिया का दस्तरख़्वान नहीं बल्कि रूहानी दस्तरख़्वान है, और उसने जिन ख़ास नेमतों का इन्तेज़ाम किया है वह यह नेमतें नहीं बल्कि रूहानी नेमतें हैं, या यूँ कहा जाए कि उसने इस महीने में हमारे जिस्म के लिए खाने-पीने का इन्तेज़ाम नहीं किया है बल्कि हमारे लिए रूह की ख़ुराक भेजी है। इसलिए इस दावत में वही आते हैं जिन्हें अपनी रूह को ख़ुराक पहुँचाना होती है। इस से वही लोग फ़ायदा उठाते हैं जिन्हें अपनी रूह की फ़िक्र होती है और जिन्हें रूह की कोई परवाह नहीं होती वह इस दस्तरख़्वान पर बैठकर भी खाने-पीने ही में लगे रहते हैं, जबकि इस महीने का और इस दावत का मक़सद कुछ और है। यही वजह है कि जब हम इस महीने की सबसे ख़ास चीज़ यानी रोज़े के बारे में ग़ौर करते हैं तो देखते हैं कि इन्सान को खाने-पीने से रोक दिया गया है और बहुत सी हलाल चीज़ें उस पर हराम

कर दी गई हैं, ताकि इस महीने में इन्सान जिस्मानी ख़ुराक की फ़िक्र में न रहे बल्कि रूहानी ख़ुराक के लिए कोशिश करे।

कौन सी नेमतें ?

इतना तो समझ में आ गया कि खुदा ने जिस दावत का इन्तेज़ाम किया है और जो दस्तरख़्वान अपने बन्दों के लिए बिछाया है उस पर दुनियावी नेमतें और खाने-पीने की चीज़ें नहीं बल्कि रूहानी ख़ुराकें हैं। किसी हद तक हम सभी इन नेमतों को जानते हैं और वह यह कि रोज़ा एक रूहानी ख़ुराक है, कुरआन की तिलावत एक रूहानी ख़ुराक है, दुआएं रूहानी ख़ुराक हैं, शबे क़द्र रूहानी ख़ुराक है, तौबा और इस्तेग़फ़ार रूहानी ख़ुराक है।

साँसें तस्बीह

और सोना इबादत है

यह सिर्फ़ रमज़ानुल मुबारक और रोज़े की ख़ास बात ही है कि इस महीने में रोज़े की हालत में इन्सान की साँसें तस्बीह बन जाती हैं और उसका सोना भी इबादत कहलाता है। यहाँ बड़ा सवाल यह है कि एक इन्सान का साँस लेना तस्बीह कैसे हो सकता है और उसका सो जाना इबादत कैसे कहला सकता है? क्या यह क्रेडिट हर रोज़ेदार को मिल जाता है? या इसके लिए कोई ख़ास शर्त है?

ऐसा हकीक़त में उस वक़्त होता है जब इन्सान ने सिर्फ़ भूख और प्यास का रोज़ा न रखा हो बल्कि उसका पूरा वुजूद रोज़े से हो और उसका पूरा वुजूद उसके कन्ट्रोल में हो। उसके जिस्म के सभी हिस्से यहाँ तक कि दिल व दिमाग़ भी रोज़े की हालत में हों। इमाम सादिक^र एक हदीस में मोहम्मद इब्ने मुस्लिम से फ़रमाते हैं; “जब रोज़ा रखो तो तुम्हारे कान का भी रोज़ा हो, तुम्हारी आँखें भी रोज़े से हों, तुम्हारी ज़बान भी रोज़े की हालत में हो, तुम्हारा गोश्त, तुम्हारी खाल, तुम्हारे बाल और हर चीज़ रोज़ेदार होना चाहिए। रोज़े की हालत में झूठ न बोलना, मोमिन भाईयों को दुख न पहुँचाना, शरीफ़ लोगों को

बेवकूफ़ न बनाना, मुसलमान भाईयों और इस्लामी समाज के खिलाफ़ कोई प्लानिंग और प्रोपेगण्डा न करना, किसी पर इल्ज़ाम न लगाना, नाप-तौल में कमी न करना, अमानत में ख़यानत न करना। हदीस के आख़िर में इमाम फ़रमाते हैं, “तुम्हारे रोज़े का दिन तुम्हारे आम दिनों जैसा नहीं होना चाहिए। रमज़ान के दिनों में दूसरे दिनों जैसे न रहना बल्कि इस मौक़े से फ़ायदा उठाकर अपने आप को संवारना और सुधारना।

एक हदीस में हज़रत अली^र फ़रमाते हैं, “नफ़्स के रोज़े में और पेट के रोज़े में फ़र्क़ है। नफ़्स का रोज़ा यह है कि इन्सान के पाँचों संसेस गुनाहों से बचें। दिल हर तरह की बुराई, गुनाह और गन्दगी से पाक-साफ़ हो।”

जब इन्सान इस तरह का रोज़ा रखता है तब जाकर उसे तक्वा मिलता है। फिर उसका उठना-बैठना और चलना-फिरना यहाँ तक कि सोना भी इबादत हो जाता है। यह उसी वक़्त हो सकता है जब उसका पूरा वुजूद रोज़ेदार बन जाए।

दुआएं कुबूल होती हैं

अल्लाह के रसूल^र के इस खुतबे में रमज़ानुल मुबारक की एक क्वालिटी यह भी बताई गई है कि इसमें दुआएं कुबूल होती हैं। लेकिन प्रेक्टिकल तौर पर इन्सान अगर देखे तो ऐसा लगता है कि बहुत सी दुआएं कुबूल नहीं होतीं। बहुत सी चीज़ें हम माँगते हैं लेकिन नहीं मिलतीं। इसकी शिकायत भी की जाती है कि साहब! हम तो दुआ करते हैं लेकिन कुबूल नहीं होती जबकि खुदा ने वादा किया है कि तुम दुआ करो मैं कुबूल करूँगा।

अब हमें यहाँ पर ध्यान देना है कि दुआ के कुबूल न होने की वजह क्या है? क्यों हमारी दुआएं कुबूल नहीं होतीं?

कई बातें हो सकती हैं इसके पीछे। इसकी एक बुनियादी वजह यह है कि हम उन शर्तों के साथ दुआ नहीं करते हैं जो दुआ के कुबूल होने के लिए ज़रूरी हैं। अल्लाह के

रसूल^{१०} फ़रमाते हैं, “खुदा से माँगो मगर सच्ची नियत और पाक व पाकीज़ा दिल के साथ। सच्ची नियत के साथ माँगने का मतलब यह है कि इन्सान अपनी दुआ में संजीदा हो, माँगते वक़्त उसका ध्यान खुदा की तरफ़ हो, उसकी सारी उम्मीद और भरोसा खुदा पर हो, इस यकीन के साथ माँगें कि खुदा ही उसकी हाज़तों को पूरा करने वाला, उसकी मुश्किलों को आसान करने वाला और उसकी परेशानियों को दूर करने वाला है। अगर होंठों पर दुआ हो लेकिन दिल में खुदा पर ईमान और यकीन न हो या दिल शक में हो कि नहीं मालूम दुआ पूरी होगी भी या नहीं तो इसका मतलब है कि दिल उस दुआ में सच्चा नहीं है।

पाक दिल का मतलब यह है कि दिल उन गुनाहों और बीमारियों से पाक हो जो इबादत, बन्दगी, दुआ, मुनाजात और राज़ व नियाज़ के रास्ते में रुकावट बन जाती हैं। कुबूलियत के दरवाज़े से वही दुआ टकराती है जो ज़बान से नहीं बल्कि दिल से निकलती है और दिल से उसी वक़्त दुआ निकलती है जब दिल कीनों, नफ़रतों, हसद, बुग़्ज़, तासुब, बदगुमानी और आपसी दुश्मनी जैसी गन्दगियों से पाक हो।

खास तौफीक़ की दुआ

सच्ची नियत और पाक दिल के साथ इन्सान को जो खास दुआ माँगना है वह इस महीने में खुदा से रोज़ों के पूरा होने और सही रोज़ा रखने की तौफीक़ है। साथ ही कुरआन की तिलावत की तौफीक़ की दुआ माँगना भी बहुत ज़रूरी है ताकि इन्सान इसके ज़रिये से परवरदिगार की तरफ़ मग़फ़िरत पा सके और जो इस महीने में भी खुदा की मग़फ़िरत नहीं पा सका वह सच में निजात नहीं पा सकता।

यहाँ दो चीज़ों की तौफीक़ की दुआ की गई है: एक रोज़े की तौफीक़ और दूसरे कुरआन की तिलावत की तौफीक़। रोज़े की तौफीक़ का मतलब यह भी हो सकता है कि

रोज़ा रखने में कोई चीज़ इन्सान के लिए रुकावट न बने और इन्सान रमज़ान के इस रूहानी रिज़्क और नेमत से पूरा फ़ायदा उठा सके जैसे कोई बीमारी न हो जाए। इस तौफीक़ का यह मतलब भी हो सकता है कि वह इस तरह से रोज़ा रख सके जिस तरह खुदा का हुक्म और उसकी मर्ज़ी है यानी वह रोज़ा जो इन्सान को तक्वे तक पहुँचाए, उसके दिल को पाक करे और उसकी रूह को पाकीज़ा बनाए, जो इस बात की वजह बने कि इन्सान परवरदिगार की रहमत और मग़फ़िरत का मुस्तहेक़ बन जाए। वरना कितने ही रोज़ेदार ऐसे होते हैं जो रोज़ा तो रखते हैं लेकिन उनका रोज़ा, रोज़ा नहीं होता।

दूसरी चीज़ कुरआन की तिलावत है जिसकी तौफीक़ की दुआ माँगी गई है। रमज़ानुल मुबारक को कुरआन की बहार कहा जाता है। खुदा की यह किताब इसी महीने में नाज़िल हुई है, यह आसमानी किताब जो हम इन्सानों की हिदायत के लिए आई है, यह सिर्फ़ इसलिए नहीं है कि हम इसे बरकत के लिए घर में रखें या अपने मरने वालों के ईसाले सवाब के लिए इसे पढ़ कर फूंक दें। बहुत से लोग खुदा की इस नेमत से फ़ायदा लेते हैं लेकिन बहुत से इसकी तरफ़ ध्यान नहीं दे पाते। कम से कम इस महीने में जो कि कुरआन की बहार का महीना है कुरआन से क़रीब होना चाहिए और इस से दिल लगाना चाहिए।

कुरआन करीम के लिए तीन हुक्म हैं या यूँ कहा जाए कि तीन मरहले हैं कुरआन की नेमत से फ़ायदा उठाने के लिए:

1- तिलावत: सबसे पहला हुक्म इस किताब की तिलावत है यानी इन्सान रोज़ाना इसे पढ़े और इसकी कुछ आयतों की तिलावत करे। हम यह नहीं कहते कि इन्सान हर रोज़ कई पारे या एक पारा पढ़े बल्कि जितनी तौफीक़ है उतना पढ़े लेकिन पढ़े ज़रूर। अब कोई यह न सोचे कि सिर्फ़

तिलावत का कोई फ़ायदा नहीं है क्योंकि ख़ाली तिलावत करने का भी अपना एक असर है, इन्सान के जिस्म और रूह दोनों पर कुरआन की तिलावत का असर होता है मगर शर्त यह है कि इन्सान यह समझ कर पढ़े कि वह खुदा का कलाम पढ़ रहा है। कुछ लोगों का यह मानना है कि अगर कुरआन की तिलावत शुरू कर दी तो रमज़ान भर में पूरा कुरआन ख़त्म करना भी ज़रूरी है। इस डर से वह शुरू ही नहीं करते कि कहीं ऐसा न हो हम शुरू कर दें और ख़त्म न कर पाएं और सवाब के बजाए उलटा अज़ाब हो। यह कुरआन के बारे में एक ग़लत सोच है। खुद कुरआन का हुक्म है “जितना हो सकता हो उतना कुरआन पढ़ो।” (सूरए मुज़्ज़म्मिल/20) इसलिए इन्सान के लिए जितना मुमकिन हो उतना ही पढ़े।

2- सोच-विचार: कुरआन से फ़ायदा उठाने का दूसरा हुक्म यह है कि इन्सान इसकी आयतों पर ग़ौर करे। इन्सान यह सोचे कि खुदा उस से क्या कह रहा है और खुदा का क्या हुक्म है उसके लिए। इसका आसान सा तरीक़ा यह है कि इन्सान तिलावत के साथ-साथ आयतों का तर्ज़ुमा भी पढ़े और आयतों को समझने की कोशिश करे।

3- अमल: तीसरा और सबसे अहम हुक्म कुरआन करीम से फ़ायदा उठाने का यह है इन्सान कुरआन पर अमल करे। इमाम अली^{११} नहजुल बलागा में अपनी आख़िरी वसियत में कुरआन करीम के लिए मुसलमानों की ग़फ़लत के बारे में फ़रमाते हैं: “अल्लाह से डरो कुरआन के बारे में कहीं ऐसा न हो कि कुरआन पर अमल करने में दूसरे तुम से आगे निकल जाएं।”

अगर देखा जाए तो आज मुसलमान कुरआन से बहुत दूर है और दूसरे ही इस से फ़ायदा उठा रहे हैं।



CORONA

का असर दुनिया पर

■ मौलाना अख़तर अब्बास जौन

125 नैनो मीटर यानी एक छोटे से प्वाइंट से 2000 गुना छोटे कोरोना नाम के वायरस ने सिर्फ़ कुछ शहरों या मुल्कों को ही नहीं बल्कि करीब-करीब पूरी दुनिया को ही हिलाकर रख दिया है। दुनिया में यह पहली बार हुआ है कि इतने बड़े पैमाने पर इन्सान इतना मजबूर व बेबस दिखाई पड़ रहा है और वह भी इतने छोटे से वायरस के हाथों।

कुछ महीने पहले कोई सोच भी नहीं सकता था कि अपनी साइंस व टेक्नॉलोजी और अपनी ताकत पर अकड़ने वाला 21वीं सदी का यह मगरूर इन्सान एक छोटे से वायरस के मुक़ाबले में इस तरह हार मान जाएगा।

पूरी दुनिया पर एक तरह का डर सा छाया हुआ है, इन्सान अपने मुल्कों और शहरों की तरफ़ भाग रहे हैं, हुकूमतें बेबस नज़र आ रही हैं, न जाने कितने मुल्कों और बहुत सारे शहरों को लॉक-डाउन कर दिया गया है, समाजी रिश्ते टूट से गये हैं, बाज़ार बन्द पड़े हैं, दुनिया का इकॉनोमी ख़तरे में है, हजारों अरब डॉलर का नुक़सान हो चुका है

और न जाने अभी इस वायरस की वजह से कितनी मुश्किलें और आने वाली हैं।

1 अप्रैल 2020 की रात तक 9,24,668 लोग इस भयानक बीमारी का शिकार हो चुके हैं और इनमें से 46,368 लोग अपनी जान से हाथ भी धो बैठे हैं। इटली, स्पेन, अमेरिका, फ़्रांस, चीन, ईरान, इंग्लैंड, जर्मनी जैसे मुल्कों में मरने वालों की तादाद सबसे ज़्यादा है और कुछ दिनों बाद यह तरतीब बदल भी सकती है। लगभग दस लाख बीमारों में से सिर्फ़ 1,93,432 लोगों को ही ठीक किया जा सका है और अभी तक ठीक से कोई इलाज भी नहीं ढूँढा जा सका है।

कोरोना वायरस क्या है ?

जानकारों का कहना है कि कोरोना वायरस कई वायरसों की एक फैमिली है जिनमें से कुछ वायरस इन्सानों में और दूसरे ज़्यादा तर जानवरों में पाए जाते हैं। आमतौर पर यह वायरस बीमारी के रूप में सामने भी नहीं आते हैं क्योंकि हमारे बदन का इम्यून सिस्टम इन से लड़ कर इन्हें ख़त्म कर देता है। इसलिए ऐसे कोरोना वायरस

किसी की जान नहीं लेते लेकिन इनमें से कुछ वायरस ऐसे भी हैं जो जानवरों में फल-फूलकर इन्सानों पर अपना निगेटिव डालते हैं जैसे SARS ने 2002 और MERS ने 2012 में अफ्रीका और मिडिल ईस्ट में एक बहुत बड़ी तादाद में इन्सानों की जान ले ली थी लेकिन फिर भी इसका दायरा छोटा था।

कोविड-19 क्या है ?

कोविड-19 कोरोना वायरस की एक नई किस्म है जिसके बारे में जानकारों को पहले पता नहीं था। इस वायरस ने चीन के वूहान शहर की मछली मार्केट में पहली बार 10 दिसम्बर 2019 को एक औरत पर हमला किया था लेकिन उसे छोटी-मोटी बीमारी समझ कर अंदेखा कर दिया गया था क्योंकि उस वक़्त तक किसी को अन्दाज़ा नहीं था कि इस वायरस के ज़रिये हमारी ज़िन्दगी और हमारे समाज के सामने कितनी बड़ी मुश्किल मुँह उठाए खड़ी है। एक हफ़्ते के बाद 17 दिसम्बर को जब वही औरत बेहोशी की हद तक बीमार पाई गई तो टेस्ट करने के बाद पता चला कि यह तो कोई नया कोरोना

कोरोना का क़हर, अभी तक...

कुल मरीज़
25 लाख
(लगभग)

कुल मौतें
1 70 000 (लगभग)



वायरस है जिसके बारे में अभी तक किसी को कुछ भी नहीं पता था। इसलिए इस बीमारी का कोई वैक्सीन और इलाज भी मौजूद नहीं था बल्कि इतनी तबाही और मौतों के बाद भी अभी तक इस बीमारी का कोई पक्का इलाज नहीं मिल सका है।

अब जबकि इस बीमारी ने बड़े पैमाने पर दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है तो इमाम मूसा काज़िम^अ की एक हदीस बार-बार याद आ रही है जिसमें इमाम मूसा काज़िम^अ ने फ़रमाया था:

“जब लोग ऐसे गुनाह करने लगे जो पहले नहीं करते थे तो खुदा उन्हें ऐसी नई बला में गिरफ़्तार कर देता है जो इस से पहले नहीं थी।”

हदीस में “ज़म्ब” लफ़ज़ इस्तेमाल हुआ है जिसके मायने “गुनाह” होते हैं लेकिन अरबी में ज़म्ब जानवर की दुम को कहते हैं और दुम हमेशा जानवर के पीछे होती है, वह जिधर जाता है दुम भी उसके पीछे-पीछे होती है। इसी लिए अरबी में गुनाह को भी ज़म्ब कहते हैं क्योंकि इन्सान जो कुछ भी करता है उसका रिज़ल्ट उसके पीछे ज़रूर आता है।

अब सवाल यह है कि यह नया गुनाह कौन सा है जिसकी वजह से आए दिन नये-नये अज़ाब, ख़ास कर कोरोना वायरस जैसी बला आ गई है ?

ज़ाहिर है कि इसके लिए किसी एक गुनाह का नाम नहीं लिया जा सकता और यह भी ज़रूरी नहीं है कि वह नया गुनाह भी कोई एक ही गुनाह हो बल्कि कई नए गुनाह भी हो सकते हैं। हो सकता है कि यह कोरोना वायरस नाम का यह अज़ाब इन्सान की नजिस और हराम ग़िज़ाओं का नतीजा हो, यह भी हो सकता है कि सोशल मीडिया से लेकर आम समाजी ज़िंदगी में हर तरफ़ फैली हुई बेहयाई और बेशर्मी का नतीजा हो, हो सकता है कि यह फ़िलिस्तीन, सीरिया, इराक़, यमन, मयानमार और ख़ुद हमारे मुल्क में होने वाले जुल्म और उस पर आम लोगों की चुप्पी का नतीजा हो, हो सकता है कि यह दुनिया भर में फैली हुई बुराईयों जैसे झूठ, फ़रेब, धोखा, ख़ास कर पॉलिटिकल

दुनिया के नेताओं और हुकूमत करने वालों की मक्कारियों और आम लोगों की बेवकूफ़ियों का नतीजा हो या यह भी हो सकता है कि यह सारी बातें जब एक साथ मिली हों तो यह नतीजा सामने आया हो लेकिन जो बात पक्की है वह कुरआन का यह एलान है:

“ज़मीन और समन्दरों में जो भी ख़राबी सामने आई है वह इन्सानों के अपने अमल और उनकी कारस्तानियों का नतीजा है और यह सब इसलिए है ताकि वह अपने कुछ आमाल (कामों) का नतीजा देखकर वापस पलट आएँ।” (सूरए रूम/41)

कुछ लोग बुराईयों और जुल्म व सितम के दलदल में इतना फंस चुके होते हैं कि उनका इस दलदल से निकल पाना मुश्किल होता है। फिर भी अल्लाह अर-ह-मुर राहिमीन (सबसे ज़्यादा रहम करने वाला) है, उसके अज़ाब में भी रहमत छुपी होती है और उसके गुज़ब पर उसकी रहमत छाई हुई होती है इसलिए वह लोगों को सख़्तियों में घेरकर अपनी तरफ़ पलटने का मौक़ा देता रहता है।

एहतियात

जो इस सारी काएनात को बनाने वाला है और जिसके कंट्रोल में सब कुछ है उसने एक छोटे से वायरस के ज़रिये इन्सानों को यह समझा दिया है कि उनके हाथ में कुछ भी



नहीं है और उनकी साइंस या टेक्नॉलोजी अल्लाह के इल्म के सामने कुछ भी न होने के बराबर है।

हम ऊपर भी कह चुके हैं कि अभी तक इस बीमारी का कोई इलाज नहीं मिल सका है इसलिए इस तरह की जानलेवा बीमारी से बचने का सबसे अच्छा तरीका एहतियात है, यानी जब तक इस बीमारी से छुटकारा नहीं मिल जाता तब तक इन्सान दूसरे लोगों के टच में कम से कम रहे, जितना हो सकता हो घरों से बाहर न निकले, किसी भी पब्लिक प्लेस या सोशल-गेट्रिंग में जाने से बचे, साफ़-सफ़ाई रखे और लोगों से दूरी बनाकर रखने यानी सोशल डिस्टेंसिंग का जो मशवरा डॉक्टरों की तरफ़ से दिया गया है उसका पूरा-पूरा ध्यान रखे। अगर आदमी को अपनी फ़िक्र नहीं है तो कम से कम अपने घर वालों और करीबी लोगों की फ़िक्र करे, खास कर उन घरों के लोगों को इस बात पर ध्यान देना चाहिए जिनके घरों में बच्चे और बुजुर्ग मौजूद हैं जिनका इम्यून सिस्टम आमतौर से उतना मज़बूत नहीं होता कि वह इस बीमारी से लड़ सकें।

दो तरह की लापरवाही इस बीमारी को ख़तरनाक स्टेज में दाख़िल कर सकती है: एक हुकूमतों की लापरवाही और ग़लत फैसले जो अभी तक बहुत ज़्यादा देखने में आ रहे हैं और दूसरे आम लोगों की बेएहतियाती कि यह भी कुछ कम नहीं रही है।

इटली और स्पेन की दो टीमों के फ़ुटबाल मैच देखने के शौक ने दोनों मुल्कों को इतनी बड़ी मुसीबत के दहाने पर ला खड़ा किया है। इस तरह की ग़लती दूसरे भी करते जा रहे हैं यानी लोगों की भीड़ कम करने के बजाए ऐसे फैसले लिये जा रहे हैं कि लोग बड़ी तादाद में इकट्ठा होते नज़र आ रहे हैं जो बड़े ही दुख की बात है।

सारी दुनिया के लिए यही अच्छा होगा कि हुकूमतें भी इस मुश्किल वक़्त में पॉलिटिकल और फ़ाइनेंशियल फ़ायदे उठाने के बजाए बीमारी को कन्ट्रोल करने और लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ठोस क़दम उठाएं। उधर लोगों को भी इस बात का भरपूर ध्यान रखना चाहिए कि एहतियात और प्रीकांशन में किसी तरह की कोई कमी न रह जाए ताकि पिछली ग़लतियों को धोया जा सके और जल्दी से जल्दी इस मुसीबत से छटकारा पाया जा सके।

साथ ही साथ अल्लाह तआला की बारगाह में सच्चे दिलों के साथ दुआ, तौबा और इस्तेग़फ़ार भी की जाए कि हर मुश्किल से निजात देने वाली ज़ात बस उसी की ज़ात है।●

कुरआन

कुरआन खुदा के फज़्लो करम का दस्तरख़ान है

कुरआन में इन्सानी क़माल और हुयमेन वेल्थुज़ के सारे नुस्खे पाये जाते हैं। यह किताब माहे रमज़ान में उतरी थी यानी इस दस्तरख़ान को माहे रमज़ान में बिछाया गया था ताकि मेहमानों की मेज़बानी के लिए दावत का सामान चुन-चुनकर लगा दिया जाये। साथ ही जिस रात में कुरआन उतरा था यानी शबे क़द्र में सारे इन्सानों के बारे में साल भर के फैसले भी होते हैं और इसी रात में इस दुनिया में पाई जाने वाली हर चीज़ की तक्दीर भी लिखी जाती है। इसलिए इस रात में इन्सान के पास यह सुनहरा मौक़ा होता है कि वह अपने हाथों से अपनी तक्दीर लिख ले और जो कुछ चाहता है खुदा के दस्तरख़ान से उठा ले।

महबूब की चौखट पर

मेज़बान और मेहमान में सबसे अच्छा रिश्ता मोहब्बत का रिश्ता होता है। ऐसी मेहमानी और मेज़बानी के सबसे खूबसूरत पल वह होते हैं जब आशिक़ व माशूक़ की एक दूसरे के साथ मुलाक़ात होती है। इश्क़ की मुलाक़ात में असली ख्वाहिश खुद माशूक़ होता है न कि उसकी दी हुई नेमतें और इस मुलाक़ात में आशिक़ व माशूक़ की सबसे बड़ी चाहत यह होती है कि जितना ज़्यादा हो सके एक दूसरे के साथ बातें करते रहें।

रोज़े का सबसे बड़ा राज़ और मक़सद अपने माशूक़ यानी अपने पालने वाले खुदा से मुलाक़ात करना और बातें करना है। यह इन्सानियत का सबसे ऊँचा मुक़ाम और इन्सान के लिए सबसे प्यारे पल हैं। इन मीठे-मीठे पलों तक पहुंचने के लिए इंसान रोज़े के ज़रिये अपने आपको सारी हैबानी और जिस्मानी ख़ाहिशों से पाक करता है। रोज़ा रखकर अब वह ख़याली अय्याशी से आज़ाद हो जाता है, अब उसे झूठ बोलने या किसी की ग़ीबत या बुराई करने में मजे के बजाय तकलीफ़ होती है, अब उसने अपनी आंखों, कानों और जुबान को हर बुराई से पाक-साफ़ कर लिया है, अब वह खानों के जायकों और मज़ों से ऊपर उठ चुका है क्योंकि अब उसे अपने महबूब से मुलाक़ात और उससे बातें करने में मज़ा आने लगा है।

हदीस में आया है, “रोज़ेदार को दो मौक़ों पर खुशी का एहसास होता है: एक इफ़्तार के वक़्त और दूसरे अपने परवरदिगार से मुलाक़ात के वक़्त।”

इफ़्तार के वक़्त इसलिए क्योंकि खुदा ने उसे तौफीक़ दी और उसका रोज़ा पूरा हो गया यानी मरीज़ नहीं हुआ, कोई सफ़र नहीं करना पड़ा, शैतान ने नहीं बहकाया और खुदा ने उसे किसी और काम में नहीं लगाया क्योंकि खुदा हर एक को अपनी बारगाह में आने की इजाज़त नहीं देता, वह जिन्हें अपनी बारगाह के लायक़ नहीं समझता उन्हें दूसरे कामों में लगा देता है, कभी परेशानियों और मुसीबतों में उलझा देता है तो कभी हद से ज़्यादा नेमतें देकर उन्हीं में उलझा देता है।

इसी तरह खुदा से मुलाक़ात के वक़्त खुशी इसलिए होती है क्योंकि इन्सान के लिये यही एक सबसे बड़ी नेमत है। अगर इन्सान इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि कुरआन खुदा का कलाम है और जब वह कुरआन पढ़ता है तो खुदा उससे कलाम कर रहा होता है, बात कर रहा होता है तो फिर वह कुरआन को सिर्फ़ सवाब के लिये नहीं पढ़ेगा बल्कि कुरआनी आयतों को अपने ज़िंदगी में ढालने की कोशिश करेगा।

इसी तरह अगर इन्सान इस बात को भी समझ ले कि दुआ करते वक़्त वह खुदा से बातें कर रहा होता है और खुदा बहुत करीब से उसकी दुआओं को सुनता है तो फिर वह खुदा की बारगाह में छोटी-छोटी और मामूली चीज़ें नहीं मांगेगा बल्कि वह चीज़ें माँगेगा जो उसके इतने ऊँचे मुक़ाम के मुताबिक़ होंगी। ऐसा भी हो सकता है कि वह कुछ माँगने के बजाये सिर्फ़ अपने परवरदिगार से बातें करने के लिए ही दुआ कर रहा हो, अगर कुछ माँग रहा हो तो खुदा से खुदा को ही माँग रहा हो क्योंकि अगर इन्सान को खुदा मिल जाये तो कुछ न होते हुए भी सब कुछ मिल जायेगा और अगर खुदा न मिला तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं मिलेगा।

“पालने वाले! उसने क्या पाया जिसने तुझे खो दिया और उसने क्या खोया जिसने तुझे पा लिया।”इमाम हुसैन³⁰



सुकून भरा घर

हज़बेंड-वाइफ़ को ऐसा होना चाहिए
कि एक-दूसरे को सुकून पहुँचाने वाले हों।
आपका घर एक ऐसा घर हो जिसमें आप दोनों
प्यार-मोहब्बत के साथ मिल-जुलकर रह सकें।
इतना ही नहीं बल्कि अपने बच्चों के लिए भी
अपने घर को एक प्यार भरा घर बनाइए।

(सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह ख़ामेनई)

तौहीद (27)

इमाम जाफर सादिक^{अ०} के एक बड़े सहाबी मुफ़्फ़ज़ल बिन उमर भी थे जिन्हें इमाम ने चार दिनों की चार बैठकों में तौहीद पर चार लेक्चर दिए थे जो तौहीद पर पूरी एक किताब है और आज भी हमारे बीच मौजूद है जिसमें इमाम ने अल्लाह की तौहीद पर बहुत गहरी-गहरी बातें बताई हैं।

हम आपके लिए इमाम के लेक्चर्स पर बेस्ठ यह सीरीज़ शुरू कर रहे हैं और उम्मीद है कि यह सीरीज़ हमारे तौहीद के अकीदे को और मज़बूत करने में काफ़ी मदद देगी...

हवा हर जगह क्यों है?

पानी की तरह हवा भी ऐसे ही है और हर जगह पाई जाती है। अगर हवा हर जगह न होती तो लोग धूल और धुएं से घुटकर मर जाते। दूसरी बात यह कि फिर बादल भी न बन पाते क्योंकि भाप उड़कर ऊपर ही न जा पाती।

वैसे हवा के बारे में हम इससे पहले भी अच्छी ख़ासी बात कर चुके हैं।

आग के फ़ाएदे

अगर आग भी पानी और हवा की तरह हर जगह होती तो यह दुनिया की हर चीज़ को जलाकर राख कर देती। लेकिन आदमी को आग की भी ज़रूरत थी और इस में उसके लिए बहुत सारे फ़ाएदे भी हैं। इसलिए अल्लाह ने आग को एक खज़ाने की तरह पत्थर, लोहे और लकड़ी में छुपा दिया है कि जब भी ज़रूरत हो और जितनी ज़रूरत हो आदमी उतनी आग जला ले जिसके लिए बत्ती, तेल और ईंधन से आग जलाई जा सकती है। अगर हमेशा तेल की बत्ती और लकड़ी के सहारे ही आग को संभालकर रखना पड़ता तो लोगों को बड़ी दिक्कत हो जाती। और अगर आग पानी व हवा की तरह चारों ओर फैली होती तो यह हर चीज़ को जलाकर राख कर डालती।

इसलिए अल्लाह ने दुनिया में आग बस इतनी ही रखी है कि इस से लोगों का भला भी हो और वह इसके नुक़सान से भी बचे रहें।

आग के अंदर एक दूसरी ख़ास बात भी छुपी हुई है और वह यह कि आग बस आदमी के हाथों में है क्योंकि आग की ज़रूरत सिर्फ़ आदमी को ही होती है।

अगर आदमी के पास आग न होती तो उसे अपने रोज़ाना के कामों में बहुत दिक्कत होती लेकिन जानवरों को आग से कोई मतलब नहीं होता और उनका कोई काम आग पर टिका हुआ नहीं है इसलिए आग उनके कंट्रोल में रखी ही नहीं गई।

अल्लाह ने जब यह तय किया कि आदमी आग से फ़ाएदा उठाए और जानवर न उठाए तो उसने उसे हाथ व उंगलियाँ भी ऐसी दीं जो आग जलाने और आग से फ़ाएदा उठाने के लिए बिल्कुल ठीक हैं। जानवरों का यूँ तो आग से कोई लेना-देना नहीं है लेकिन उन्हें इसके बदले में ठंड को झेलने की ताक़त ज़्यादा दी है ताकि आग के न होने से जो नुक़सान आदमी को होता है वह जानवरों को न हो।

अब मैं तुम्हें आग के एक ऐसे फ़ाएदे के बारे में बताता हूँ जो दिखने में तो छोटा है लेकिन

असलियत यह है कि यह एक बहुत बड़ा फ़ाएदा है। जिस फ़ाएदे की मैं बात कर रहा हूँ वह यही छोटा सा चिराग़ है जो लोगों के घरों में जलता है और वह इसे जलाकर रात में अपने काम करते हैं।

अगर आग न होती तो लोग इस दुनिया में बिल्कुल ऐसे रहते जैसे अंधेरी क़ब्रों में रह रहे हों। फिर भला घुप अंधेरे में कौन पढ़ पाता, लिख पाता या कुछ याद कर पाता? या अंधेरे में कौन सिलाई, कताई और बुनाई कर पाता? अगर रात में अचानक कोई बीमार हो जाता और उसे फ़ौरन दवा की ज़रूरत पड़ जाती तो वह अंधेरे में कहाँ जाता?

इसी तरह खाना पकाने, बदन को गर्मी पहुँचाने, कपड़े सुखाने और चीज़ों को धोने में आग के इतने फ़ाएदे हैं कि उन्हें गिना भी नहीं जा सकता और वैसे भी आग के फ़ाएदे तो इतने सामने के हैं कि उन पर बात भी करने की ज़रूरत नहीं है।

बादलों का आना-जाना

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! इस बात पर भी ध्यान दो कि दुनिया की भलाई के लिए आसमान कभी साफ़ रहता है और कभी बदली छा जाती है। अगर इन दोनों में से कोई भी मौसम हमेशा एक जैसा रहता तो जीना दूभर हो जाता। क्या तुम नहीं देखते कि अगर ज़्यादा बारिश हो जाए तो सब्ज़ियाँ और खाने-पीने की चीज़ें सड़ने लगती हैं? जानदारों के बदन सुस्त पड़ जाते हैं, हवा ठंडी हो जाती है, हर जगह बीमारियाँ फैल जाती हैं और रास्ते बंद हो जाते हैं जिसकी वजह से आना-जाना मुसीबत बन जाता है।

इसी तरह अगर आसमान हमेशा साफ़ रहता और धूप निकली रहती तो ज़मीन सूखकर पत्थर हो जाती, पेड़-पौधे जल जाते और मुरझा जाते। झरनों और नदियों का पानी सूख जाता जिससे लोगों को बहुत बड़ा नुक़सान होता। साथ ही अगर हवा से नमी निकल जाए और उसकी जगह सूखापन पैदा हो जाए तो उस सूखेपन से भी बहुत सारी बीमारियाँ फैल जाएंगी।

इसके उलट अगर दोनों मौसम बारी-बारी से

आएं यानी कभी आसमान पर सूरज चमकता रहे और कभी बारिश का मौसम आ जाए तो इसका फ़ाएदा यह है कि मौसम और हवा में बैलेंस बना रहता है और यह दोनों एक दूसरे से होने वाले नुक़सान की भरपाई कर देते हैं जिससे सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहता है।

अब अगर कोई कहे कि क्या ऐसा नहीं हो सकता था कि इन दोनों मौसमों से कोई नुक़सान ही न होता? तो इसका जवाब यह है कि दुनिया में आदमी की भलाई इसी में है कि वह थोड़ा-बहुत मुसीबतों और दिक्कतों को भी झेले ताकि गुनाहों से दूर रह सके। ठीक उसी तरह जैसे अगर कोई बीमार हो जाए तो फिर से ठीक होने के लिए वह कड़वी-कड़वी दवाएं खाता है, वैसे ही बुराईयों व गुनाहों में डूबा हुआ आदमी भी तभी अपने होश में आता है और पलट कर सीधे रास्ते पर आता है जब वह किसी मुसीबत में फंस जाता है। मुसीबतें उसका दिमाग़ ठिकाने पर लगा देती हैं।

अगर कोई बादशाह अपनी प्रजा के बीच सोना-चाँदी बाँटने लगे तो लोग उसकी कितनी इज़्ज़त करेंगे और उसकी कितनी तारीफ़ होगी? हर आदमी उसकी इतनी तारीफ़ करेगा कि हर जगह बस उसी के नाम के चर्चे होंगे। अब इस के मुक़ाबलें में बारिश की उन बूंदों के बारे में सोचो जिनके बल पर ही यह सारा अनाज पैदा होता है, भला वह सोने-चाँदी के सिक्के कहाँ और यह बारिश की बूँदें कहाँ? इस बारिश की बूंदों से उन सोने-चाँदी के सिक्कों का कोई मुक़ाबला ही नहीं है।

क्या तुम जानते हो कि बारिश की एक-एक बूँद की कीमत क्या है? और यह कितनी बड़ी नेमत है? लेकिन लोग इस बारिश की कीमत को नहीं समझते। इतनी बड़ी नेमत मिलने के बाद भी अगर किसी आदमी की कोई दुआ पूरी होने में देर हो जाए तो वह चीखने-चिल्लाने लगता है और उल्टी-सीधी बातें करने लगता है, जबकि उसकी भलाई इसी में थी कि उसकी दुआ देर में पूरी हो। आदमी अपने छोटे-छोटे फ़ाएदों के लिए बड़े-बड़े फ़ाएदों को इतनी आसानी से गंवा देता है।



जवानी

अपने इमाम^{अ०} के रास्ते पर चलने का सबसे अच्छा ज़माना

जवानी सबसे अहम और सेंस्टिव पीरियड होता है क्योंकि ईमान और अक़ीदे, इरादे और आज़ादी, उम्मीद और ताक़त को ज़ाहिर करने का असली मैदान जवानी ही है। जवानी ही में इन्सान वैल्यूज़ की परवरिश होती है और जवानी ही में इन्सान खुद को इस क़ाबिल बना सकता है कि हिदायत के सीधे रास्ते पर चलते हुए खुदा का सबसे अच्छा बन्दा बन जाए। इस्लाम ने जवानी की हर चीज़ को अहमियत दी है, जवानी की इबादत, जवानी की मेहनत, जवानी की कोशिश, जवानी की इताअत, जवानी की इबादत, जवानी की तौबा, जवानी की कोशिशें, जवानी का इल्म वगैरा। यह पीरियड इन्सान ज़िन्दगी का सबसे अच्छा, सबसे प्यारा और सुनहरा पीरियड है। इसी लिए इस दौर से भरपूर फ़ायदा उठाने पर ज़ोर दिया गया है।

पैग़म्बरे अकरम^{अ०} फ़रमाते हैं, “क़यामत के दिन इन्सान को रोक कर चार चीज़ों के बारे में पूछा जाएगा: (1) उम्र कैसे गुज़री (2) जवानी कैसे गुज़री (3) माल कहाँ ख़र्च किया (4) और अहलेबैत^{अ०} की मोहब्बत।”

इस हदीस में जिस बात की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है वह यह है कि एक बार पूरी उम्र के बारे में पूछा जाए कि कहाँ और कैसे गुज़री और फिर ख़ास तौर पर जवानी के बारे में पूछा जाएगा कि जवानी कहाँ और कैसे गुज़री।

इमाम अली^{अ०} फ़रमाते हैं, “चार चीज़ें ऐसी हैं

जिनकी कीमत चार लोग ही जानते हैं: जवानी की कीमत बस बूढ़ों को मालूम है, आसानियों की कीमत सिर्फ़ वह जानते हैं जिन पर मुसीबत आती है, सेहत और तन्दुरुस्ती की कीमत वही जानते हैं जो बीमार हो जाएं और ज़िन्दगी की कीमत उन्हीं को मालूम होती है जो मौत को आँखों से देख रहे होते हैं।”

सवाल यह है कि जवानी पर इतना ज़ोर क्यों दिया गया है और इसे इतनी अहमियत क्यों दी गई है? इसका जवाब यह है कि जो अच्छाईयाँ जवानी के पीरियड में इन्सान के अन्दर पाई जाती हैं और जो एनर्जी, ताक़त और इमोशंस जवानी में और जवानों के पास होता है वह बचपन और बुढ़ापे में नहीं होता। जवान को खुदा ने जो सलाहियतें दी हैं वह दूसरों में नहीं होतीं।

जवान और इमामे ज़माना^{अ०}

इसी लिए इस्लाम में और ख़ास कर अहलेबैत^{अ०} के मज़हब में जवानों को बहुत ज़्यादा अहमियत दी गई है। मासूमीन की ज़िन्दगी की उम्र देखी जाए तो सभी जवान नज़र आते हैं। हमारे अक्सर इमाम, जवानी की उम्र में इमाम बने हैं। इमाम अली^{अ०} 34 साल की उम्र में इमाम बने थे और इमामे ज़माना^{अ०} भी जब आएंगे तो जवान ही होंगे। आपके सहाबियों और साथियों की गिनती भी ज़्यादा तर जवान ही होगी। इमामे ज़माना^{अ०} उम्र के हिसाब से दुनिया में सबसे ज़्यादा लम्बी उम्र रखने वाले

السلامة والرفح

लोगों में से होंगे लेकिन जब लोग उन्हें देखेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि आपकी उम्र चालीस साल या उस से भी कम है।⁽¹⁾ इस से यह समझ में आता है कि जुहूर के बाद जो हुक्मत होगी वह जवानों की होगी जिसमें इमाम^{अ०} भी जवान होंगे, उम्मत भी जवान होगी और हुक्मत भी जवानों के हाथ में होगी। ग़ैबत और जुहूर के ज़माने में जवानी और जवानों की अहमियत का अन्दाज़ा यहीं से लगाया जा सकता है और नौजवानों व जवानों की परवरिश का अन्दाज़ा भी यहाँ से हो जाता है। वह भी ऐसी परवरिश जिसके ज़रिये जवान अपने इमाम^{अ०} की मारेफ़त हासिल करें, उन से मोहब्बत करने लगे और अपने अन्दर वह क्वालिटीज़ पैदा कर लें जो इमामे ज़माना^{अ०} के जवान साथियों के अन्दर होंगी।

इन जवानों की क्वालिटीज़

जब हम हदीसों में इमामे ज़माना^{अ०} के साथियों की क्वालिटीज़ तलाश करते हैं तो हमें इन जवानों की कुछ खास क्वालिटीज़ नज़र आती हैं जो अपने इमाम^{अ०} पर भरपूर ईमान रखते हैं, उनकी अच्छी तरह मारेफ़त रखते हैं, उनके दिल इमाम^{अ०} की मोहब्बत से नूरानी हैं और इमाम की मदद और हिमायत के लिए वह हर लिहाज़ से और हर वक़्त तैयार हैं। इमामे ज़माना^{अ०} पर ईमान लाने और उनकी मदद करने वालों में अकसरियत जवानों की होगी क्योंकि जवान का नेचर पाक होता है, उसके अन्दर की दुनिया पाक होती है इसलिए उसका दिल जल्दी हक़ की तरफ़ झुक जाता है। अल्लाह के रसूल^{अ०} की रिसालत के शुरु के सालों में उन पर ईमान लाने वाले और उनकी मदद करने वालों में भी अकसरियत जवानों की ही दिखाई पड़ती है। जवानों के बारे में अल्लाह के रसूल^{अ०} फ़रमाते हैं: “मैं जवानों के बारे में तुम सब को ख़ैर और नेकी की नसीहत करता हूँ; क्योंकि उनका दिल दूसरों से ज़्यादा पाक और हमदर्द होता है। खुदा ने मुझे रहमत की बशारत देने वाला और अज़ाब से डराने वाला बनाकर भेजा है। जवानों ने मेरे पैग़ाम को दिल से कुबूल किया है और

मेरा साथ दिया है लेकिन बड़े मेरी मुख़ालिफ़त में खड़े हो गये।”⁽²⁾

रसूले अकरम^{अ०} के ज़माने के जवानों ने अपनी ख़्वाहिशें पूरी करने या अपने निजी फ़ायदों के लिए इस्लाम कुबूल नहीं किया था बल्कि वह लोग इसलिए इस्लाम पर ईमान लाए थे क्योंकि इस्लाम का मैसेज उनके पाक नेचर से मैच करता था। वह एक ऐसे ही आसमानी मैसेज का इन्तेज़ार कर रहे थे जो उन्हें सारी ज़ंजीरों से आज़ाद करके एक ऐसे बन्धन में बाँध दे जिसमें बंधने के बाद वह दुनिया के हर बन्धन से आज़ाद हो जाएं। इसी लिए हम देखते हैं कि वह लोग इस्लाम कुबूल करने के बाद सामने आने वाली सारी मुश्किलों, परेशानियों, कठिनाईयों और हर तरह के एक्शन और रीएक्शन का सामना करने के लिए तैयार हो गये थे। इमामे ज़माना^{अ०} की हुक्मत जवानों की सभी आरजूओं को पूरा करने वाली, उनके ख़्वाबों को सच्चा करने वाली, उनकी सलाहियतों को निखारने वाली और उन्हें कमाल तक पहुँचाने वाली होगी।

ऐसे जवानों की परवरिश

ऐसी क्वालिटीज़ रखने वाले जवानों की परवरिश करना माँ-बाप का काम है। अगर माँ-बाप जवानों की ज़रूरतों, सलाहियतों, उनकी साइकॉलोजी, हालात और उनकी मुश्किलों को समझते हुए उनकी परवरिश करेंगे तो इसमें कोई शक नहीं कि वह उन्हें रसूले अकरम^{अ०} के ज़माने के जवानों जैसा बनाने और इमामे ज़माना^{अ०} के साथियों जैसा बनाने में कामयाब हो जाएंगे। इसके लिए माँ-बाप को के लिए कुछ चीज़ों की तरफ़ ध्यान देना बहुत ज़रूरी है जिनमें से कुछ हम यहाँ पेश कर रहे हैं:

1- मोहब्बत व दोस्ती के साथ रास्ता दिखाना

जवानी एक ऐसा पीरियड है जिसमें एक जवान की साइकॉलोजी बहुत नाज़ुक दौर से गुज़र रही होती है। वह इस उम्र में मोहब्बत, दोस्ती और इज़ज़त का प्यासा होता है। इसी लिए इस्लाम जवानों के साथ प्यार-मोहब्बत से पेश आने की नसीहत करता है। अल्लाह के रसूल^{अ०} फ़रमाते हैं: “मैं तुम सबको नसीहत

السلامة والرفح

करता हूँ कि जवानों के साथ मेहरबानी के साथ पेश आओ क्योंकि वह उम्र के इस दौर में नाजुक दिल वाले होते हैं।”⁽³⁾

नौजवान और जवान इस दौर में कच्चा, जल्दबाज़, कम हौसले वाला और जल्दी नाराज़ होने वाला होता है इसलिए उसकी एजुकेशन और परवरिश में मोहब्बत के साथ समझाने-बुझाने और उसकी ग़लतियों पर माफ़ करने का तरीका अपनाना चाहिए।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन^अ फ़रमाते हैं: “जो तुम से छोटे हैं उनका तुम पर यह हक़ है कि उनकी तालीम और परवरिश में मेहरबान रहो। उनकी ग़लतियों को माफ़ करो। उनके ऐबों और बुराईयों पर पर्दा डालो। सभी कामों में उनके साथ हमदर्दी दिखाओ। मुश्किलों और परेशानियों में उनकी मदद करो। छोटे और तजुर्बा न होने की वजह से होने वाली ग़लतियों को अनदेखा करो ताकि उन्हें तौबा और सुधार का मौका मिले। उनके साथ दोस्तों जैसा बर्ताव करो।”

2- बच्चों को इमामे ज़माना^अ की मदद के लिए तैयार करना

इमाम ज़माना^अ की ख़िदमत और मदद की आरजू हमारे इमामों और सभी नेक लोगों ने की है और इसके लिए दुआ भी की है।

इमाम हुसैन^अ फ़रमाते हैं: “अगर मैंने उनका ज़माना देखा तो अपनी पूरी ज़िन्दगी उनकी ख़िदमत में लगा दूँगा।”⁽⁴⁾

इमाम सज्जाद^अ की दुआ है: “खुदाया! मुझे इमाम मेहदी^अ के बेहतरीन मदद करने वालों, इताअत करने वालों और उनके शिष्यों में शामिल कर दे और मुझे उनके साथ शहादत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमा।”⁽⁵⁾

इमाम सादिक^अ फ़रमाते हैं: “अगर मुझे उनका ज़माना मिलता तो मैं पूरी उम्र उनकी ख़िदमत करता।”⁽⁶⁾

इमाम हसन असकरी^अ दुआ फ़रमाते हैं: “खुदाया मुझे उनके साथियों और उनके शिष्यों में क़रार दे।”⁽⁷⁾

यह हमारे इमामों की आरजू और दुआ है। बेशक! उनके चाहने वालों और उनके रास्ते पर चलने वालों की भी यही आरजू होगी और होना भी चाहिए। इसलिए माँ-बाप का फ़र्ज़ है कि वह बचपन और नौजवानी में बच्चों की इस तरह परवरिश करें कि जवानी में उनके अन्दर इमामे ज़माना^अ की ख़िदमत और मदद का भरपूर जज़्बा पैदा हो चुका हो।

3- मोमिन जवानों को आइडियल बनाना

जवान एक आइडियल ज़िन्दगी पसन्द करते हैं इसलिए हमेशा अपने लिए आइडियल्स की तलाश में रहते हैं। इसी साइकॉलोजी को नज़र में रखते हुए दुनिया वालों ने जवानों के सामने झूठे और ख़याली आइडियल्स पेश करके उनकी इस चाहत और ख़्वाहिश को पूरा करने की हमेशा कोशिश की है और काफी हद तक वह इस कोशिश में कामयाब भी रहे हैं। फ़िल्मी सितारों, खिलाड़ियों, सिंगर्स और इस तरह के लोगों को हमेशा आइडियल बनाकर पेश किया जाता है जबकि उनमें अकसरियत ऐसे लोगों की होती है जो दीन और ईमान से दूर और इन्सानियत में नाकाम होते हैं। जवानों की इसी ज़रूरत को सामने रखते हुए क़ुरआन करीम ने मोमिन और पाक जवानों को आइडियल बनाकर पेश किया है ताकि खुदा, रसूल^अ और अहलेबैत^अ से मोहब्बत रखने वाला जवान इधर-उधर की ठोकरें खाने के बजाए इन्हीं जवानों को अपना आइडियल बनाए। जैसे क़ुरआन ने:

- सब्र व साबित क़दम रहने यानी अल्लाह के रास्ते पर डटे रहने में जनाबे इस्माईल की मिसाल पेश की है
- किरदार को पाक रखने में हज़रत यूसुफ़ की मिसाल पेश की है।
- खुलूस और खुदा से डरने में जनाबे यहया की मिसाल पेश की है।
- बहादुरी में हज़रत दाऊद की मिसाल पेश की है।
- नसीहत क़बूल करने में हज़रत लुक्मान के बेटे की मिसाल पेश की है।
- ईमान पर डभे रहने में अस्थाबे कहफ़ की मिसाल

السلامة والرفعة

पेश की है।

इस्लामी हिस्ट्री में भी हमें ऐसे बहुत से जवानों की मिसाल मिलती है जो ईमान, तक्वा, सन्न, जिहाद, कोशिश, ईसार, कुर्बानी और दूसरी इन्सानी वैल्यूज में आइडियल थे जिन्हें आज भी जवानों के लिए आइडियल बनाकर पेश किया जा सकता है। खास कर दीन की मदद करने में उनका रोल बहुत अनोखा और बेमिसाल है।

- जनाबे जाफर इब्ने अबी तालिब बीस साल की उम्र में ईमान लाए थे और जवानी में ही अल्लाह के रसूल^स ने उन्हें अपना नुमाइन्दा बनाकर मुसलमानों के साथ हब्शा भेजा था।⁽⁸⁾

- जैद इब्ने हारसा जवानी में मुसलमान हुए। अकसर जंगों में पैगम्बरे अकरम^स के साथ रहे। तायफ की जंग में अल्लाह के रसूल^स पर हमला हुआ तो खुद को अल्लाह के रसूल^स की ढाल बना लिया और बहुत ज़ख्मी हुए। जंगे मौता में जाफर बिन अबी तालिब^स की शहादत के बाद इन्हीं ने फौज की कमान संभाली थी।⁽⁹⁾

- अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद बीस साल की उम्र में इस्लाम लाए। कुरआन के बेहतरीन कारी और हाफिज़ थे। मुशिरकों के बीच जाकर ऊँची आवाज़ में कुरआन पढ़ा करते थे। कई बार इस वजह से उन पर हमले भी हुए और ज़ख्मी भी हुए। इब्ने मसऊद को कुरआन के बड़े मुफ़स्सिरों में गिना जाता है।⁽¹⁰⁾

- मुआज़ इब्ने जबल ने अटठारह साल की उम्र में इस्लाम क़बूल किया। बीस साल की उम्र में बद्र जैसी जंग में शिरकत की। इसी उम्र में अल्लाह के रसूल^स ने उन्हें मक्के में दीन की तबलीग के लिए भेजा।⁽¹¹⁾

- मुस्अब इब्ने उमैर इस्लाम के पहले मुबल्लिग हैं जिन्हें अल्लाह के रसूल^स ने मदीने भेजा। वह एक अमीर खानदान से थे लेकिन उनकी दौलत कभी भी उनके ईमान, उनकी मारेफत और खुदा के नाम पर जिहाद के रास्ते में आड़े नहीं आ सकी। उनके माँ-बाप को उनका मुसलमान होना अच्छा नहीं लगा था। इन पर

पाबन्दियाँ लगाई गईं, घर में बन्द किया गया, रुकावटें खड़ी की गईं लेकिन उन्होंने दीन से क़दम पीछे नहीं हटाया। पहली बार मदीने में नमाज़े जुमा आप ही ने शुरू की और जंगे उहद में शहीद हुए।⁽¹²⁾

- अत्ताब इब्ने सैय्यद जिन्हें फ़त्हे मक्का के बाद पैगम्बरे अकरम^स ने मक्के का गवर्नर बनाया और मक्के में पहली नमाज़े जमाअत आपने पढ़ाई।⁽¹³⁾

- उसामा इब्ने जैद जिन्हें पैगम्बरे इस्लाम^स ने अटठारह साल की उम्र में अपनी फौज का कमाण्डर बनाया और उनकी मुख़ालिफ़त करने वालों पर लानत की।⁽¹⁴⁾

- अम्मार इब्ने यासिर जिनकी माँ इस्लाम की पहली शहीद औरत हैं। उन्हें और उनके माँ-बाप को मुशिरकों ने सख़्त तकलीफ़ें पहुँचाईं लेकिन पैगम्बरे अकरम^स की मदद और हिमायत से पीछे नहीं हटे।

गैबत के ज़माने में भी हमें बहुत से नौजवानों और जवानों की मिसाल मिलती है जो आइडियल की हैसियत रखते हैं। वह लोग जिन्होंने सिर्फ़ ज़बान से “इमाम के जुहूर” के लिए दुआएं नहीं माँगीं बल्कि वक़्त के इमाम का इन्तेज़ार दिल से किया और खुदा और इस्लाम के नाम पर अपनी जानें तक कुर्बान कर दीं। इसकी सबसे बड़ी मिसाल इस्लामी इन्क़िलाब के लिए और इसके बाद दी जाने वाली कुर्बानियाँ हैं जो इमाम हुसैन^स और इमाम मेहदी^स के रास्ते में दी गई हैं। यह वह जवान थे जिन्होंने अपनी ज़िन्दगियाँ इमाम के जुहूर के लिए ज़मीन तैयार करने में लगा दी थी और इसी रास्ते में शहीद भी हुए थे।

1-शेख़ सद्दूक़, कमालुद्दीन, 2/652, 2-हिकमुन्नबी, मोहम्मद रै शहरी, 4/231, 3-हिकमुन्नबी, मोहम्मदी रै शहरी, 2/241, 4-बिहारुल अनवार, 51/148 ह-23, 5-इक़बालुल आमाल, सैय्यद इब्ने ताऊस/364, 6-अल-ग़ैबत, नोमानी/245, 7-बिहारुल अनवार, 91/4, 8-काफ़ी, शेख़ कुलैनी, 8/110 ह-90, 9-अज़्लामुल वरा, तबरिसी, 1/212, 10-रिजाल, शेख़ तूसी, 1/179, 11-बिहारुल अनवार, 3/378, 12-बिहारुल अनवार, 6/405, 13-उसदुल गाबा, इब्ने असीर, 4/369, 14-तबकातुल कुबरा, इब्ने सअद, 4/66



अगर हम

इन आयतों पर अमल कर लेते...

1- अगर हम में से हर एक सूरए आराफ़ की आयत नम्बर-31 (खाओ पियो लेकिन इसराफ़ न करो) पर अमल करता तो हर एक अपनी ज़रूरत भर अपने हिस्से का खाता-पीता, ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल न करता और बचा हुआ खाना फेंका न जाता जिसके बाद शायद कोई भूखा न रहता और भूखा न सोता।

2- अगर हर एक सूरए मुल्क की आयत/15 (ज़मीन पर चलो (कोशिश करो) और खुदा का दिया हुआ रिज़क खाओ) पर अमल करता तो मेहनत करने को ज़िन्दगी का असली उसूल बना लेता और अपने रिज़क के लिए ख़ूब कोशिश करता।

3- अगर हर एक सूरए बक्रा की आयत/82 (लोगों के साथ अच्छी बातें करो) की तरफ़ ध्यान देता तो कोई किसी पर गुस्सा न करता, झगड़ा न होता और इस तरह गीबत और झूठ जैसी बुराईयाँ भी ख़त्म हो जातीं।

4- अगर हर एक सूरए इसरा की आयत/37 (ज़मीन पर अकड़ कर मत चलो) की तरफ़ ध्यान देता तो कोई भी दूसरों के सामने अपनी बड़ाई और अकड़ न दिखाता और घमण्ड न करता। इस तरह तकबुर और घमण्ड जैसी बीमारियाँ ख़त्म हो जातीं।

5- अगर हर एक सूरए आले इमरान की आयत/73 (हर एक पर ईमान न लाओ और भरोसा न करो, भरोसा करना है तो उन पर करो जो तुम्हारे दीनी भाई हैं) पर अमल करता तो हम में से कोई भी इस्लाम और मुसलमानों की दुश्मन ताकतों के सामने खुद को कमज़ोर न समझता और आँख बन्द करके दुश्मन के कलचर को न अपना लेता।

6- अगर हर इंसान सूरए नूर की

आयत/36 (वह लोग जिन्हें तित्जारत या कोई दूसरा मामला खुदा की याद, नमाज़ और ज़कात से गाफ़िल नहीं करता; जो उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आँखें उलट-पलट जाएंगी) पर अमल करता, तो अज़ान के वक़्त लोग बाज़ारों के बजाए मस्जिदों में दिखाई देते, लोगों के बीच मेल-मोहब्बत ज़्यादा होती, खुदा के हुक्म पर अमल होता, बुराईयाँ न फैलती और खुदा की बरकतें हमारी तरफ़ आसानी से आती रहतीं।

7- अगर हर एक सूरह आराफ़ की आयत/199 (दूसरों को नेकियों और अच्छाईयों की तरफ़ बुलाओ) पर अमल करता, तो किसी को अपने मोमिन भाई की नसीहत बुरी न लगती और कोई यह न कहता कि “तुम से क्या मतलब”। इस तरह समाज में नेकियाँ फैल जातीं और बुराईयाँ कम हो जातीं।

8- अगर हर औरत सूरए नूर की आयत/31 (वह अपनी जीनत (ख़ूबसूरती और ज़ेवर वगैरा) अपने शौहरों के अलावा किसी को न दिखाया करें) पर अमल करतीं, तो कोई औरत अपने शौहर के अलावा किसी मर्द के लिए खुद को न सजाती और न संवारती, अकसर लोगों की ज़िन्दगी में सुकून होता और जवान अपनी हवस की वजह से लड़कियों के पीछे न भागते।

9- अगर हम में से हर एक सूरए नूर की आयत/30 (मर्दों के लिए ज़रूरी है कि वह अपनी आँखें नीची रखें) पर कान धरता, तो कोई भी नामहरमों की तरफ़ न देखता और शैतान का ज़हरीला तीर किसी की आँखों और दिल में न लगता और न लड़कियों की इज़ज़त पर हमला होता।

10- अगर जवान लड़के और लड़कियाँ सूरए नूर की आयत/33 (जिनके पास शादी करने की ताक़त नहीं है उन्हें चाहिए कि वह खुद को गुनाहों से बचाएं, यहाँ तक कि खुदा उन पर अपना फ़ज़ल करे) पर अमल करते, तो शादी न कर सकने की वजह से गुनाह न करते, बल्कि सब्र करते यहाँ तक कि खुदा उनकी शादी के रास्ते खोल देता।

11- अगर हर आदमी सूरए नूर की आयत/11 (जो लोग यह चाहते हैं कि मोमिनों के बीच गुनाहों को फैला दें तो उनके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब है) पर अमल करता, तो कोई भी अपने दोस्तों को गुनाहों की तरफ़ खींच कर न ले जाता, लोग एक दूसरे को नामुनासिब फ़ोटो, टेक्स्ट और वीडियो न भेजते, और दूसरों की गुमराही की वजह न बनते।

12- अगर हर एक सूरए अलक की आयत (क्या वह नहीं जानता है कि खुदा देख रहा है) को ध्यान में रखता तो खुदा के सामने इन गयारह गुनाहों में से एक गुनाह भी न करता, जिन्हें हम ने ऊपर बताया है। अगर कुरआन करीम की 6236 आयतों में से सिर्फ़ इसी एक आयत पर हमें यकीन होता और इस बात पर ईमान होता कि खुदा हमें देख रहा है तो हम खुदा के सामने कभी गुनाह की हिम्मत न करते।

13- और अगर हर एक इस आयत (जो थोड़ा सा नेक काम करेगा वह उसे देखेगा और जो थोड़ा सा भी बुरा काम करेगा वह भी उसे देखेगा) पर यकीन कर ले, तो हर कदम सोच-समझ कर उठाएगा और हर काम यह सोच कर करेगा कि उस काम का हिसाब देना है। ●



आयतुल्लाह
नासिर मकारिम शीराज़ी

सूरए तौहीद

यह सूरह मक्का में नाज़िल हुआ और इसकी चार आयतें हैं।

इस सूरे में क्या है ?

यह सूरह खुदा की तौहीद और उसके एक होने की बात करता है। इसकी चार आयतों में तौहीद को पूरी तरह समझा दिया गया है, जिसके बाद कुछ और कहने या सुनने की ज़रूरत ही नहीं रह जाती।

यह सूरह कब और क्यों नाज़िल हुआ इसके बारे में इमाम जाफ़र सादिक^अ फ़रमाते हैं: “यहूदियों ने अल्लाह के रसूल^अ से कहा कि हमें खुदा की तौहीद समझाइये। अल्लाह के रसूल^अ ने तीन दिनों तक उनका कोई जवाब नहीं दिया बल्कि चुप रहे और फिर तीन दिन के बाद यह सूरह उतरा और आप ने उनका जवाब दिया।”

सूरे की फ़ज़ीलत

इस सूरे की फ़ज़ीलत के बारे में बहुत सारी हदीसें बयान की गई हैं जिन से इसकी अज़मत और अहमियत का पता चलता है जैसे: अल्लाह के रसूल^अ फ़रमाते हैं, “तुम लोगों में वह कौन है जो हर रात एक तिहाई क़ुरआन पढ़ सके?” किसी ने कहा, “अल्लाह के रसूल! यह तो कोई भी नहीं कर सकता।” अल्लाह के रसूल^अ ने फ़रमाया, “अगर ऐसा करना चाहते हो तो सूरए तौहीद पढ़ा करो”।

इमाम सादिक^अ की एक हदीस में आया है: जब अल्लाह के रसूल^अ ने सअद की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई तो फ़रमाया कि सत्तर हज़ार फ़रिश्तों ने सअद की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी है जिनमें जिबरईल भी थे। मैंने जिबरईल से पूछा, “सअद का कौन सा ऐसा अमल था जिसकी वजह से फ़रिश्तों ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी?” जिबरईल ने कहा, “वह उठते-बैठते, सवारी पर चढ़ते और उस से उतरते वक़्त और आते-जाते हर वक़्त सूरए तौहीद पढ़ा करते थे।”

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

खुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत ज़्यादा रहम करने वाला है।

आयत नम्बर-1

قال هو الله احد

कह दीजिए कि खुदा एक है।

बहुत से लोगों और धर्मों के मानने वालों ने अल्लाह के रसूल^अ से खुदा के बारे में पूछा तो जवाब आया, “कह दीजिए कि वह एक और अकेला है।” इस आयत में “हु-व” एक “प्रोनाउन” है जो कि अरबी ग्रामर में “थर्ड पर्सन” की तरफ़ इशारा करता है। यह प्रोनाउन कुछ भी साफ़ तौर पर बयान नहीं बताता है कि वह कौन है जिसकी तरफ़ यह आयत इशारा कर रही है। इस से यह समझ में आता है कि खुदा न सिर्फ़ हमारी

बन्धी-टिकी नज़रों से बल्कि हमारी सोच और खयालों से भी ऊपर है। उसे न देखा जा सकता है, न ढूँढा जा सकता है और न पाया जा सकता है, लेकिन उसकी निशानियाँ इस तरह से इस दुनिया में फैली हुई हैं कि उसके जलवे हर चीज़ में नज़र आते हैं। जैसा कि सूरए फ़ुस्सिलत की आयत। 53 में कहा गया है, “हम जल्दी ही उन्हें अपनी निशानियाँ इस दुनिया और खुद इन (इन्सानों) के अन्दर दिखाएंगे ताकि उनके लिए साफ़ हो जाए कि वह हक़ है।”⁽¹⁾

“हु-व” के ज़रिये खुदा की तरफ़ इशारा करने के बाद क़ुरआन कहता है, “वह खुदा एक और अकेला है”।

हज़रत अली^अ फ़रमाते हैं: “जंगे बद्र में एक रात मैंने हज़रत ख़िज़्र को ख़्वाब में देखा। मैंने उन से कहा: मुझे कोई ऐसी चीज़ बताईये जिसके ज़रिये मुझे दुश्मनों से मुकाबले में कामयाबी मिल जाए। उन्होंने कहा: يا هويا من لا هو الا هو

जब सुबह हुई तो मैंने अपना ख़्वाब अल्लाह के रसूल^अ के सामने बयान किया। उन्होंने फ़रमाया: ऐ अली! आपको “इस्मे आज़म” सिखाया गया है। इसके बाद मैं जंगे बद्र में इस ज़िक्र को बार-बार दोहराता रहा”।

अम्मार यासिर ने जब हज़रत अली^अ को

सिफ्फ़ीन की जंग में यही ज़िक्र पढ़ते हुए देखा तो पूछा: मौला! इस ज़िक्र का राज़ क्या है ?

इमाम अली^अ ने जवाब दिया: यह इस्मे आज़म और तौहीद की बुनियाद है।

“अल्लाह” खुदा का सबसे खास नाम है। इस एक लफ़्ज़ में उसकी सारी सिफ़तें इकट्ठा हो गई हैं। यह नाम सिर्फ़ खुदा का है और उसी के लिए इस्तेमाल हो सकता है। लेकिन इस नाम के अलावा खुदा के दूसरे नाम जो खुदा की किसी न किसी सिफ़त को बयान करते हैं वह खुदा को छोड़ कर दूसरों के लिए भी इस्तेमाल किये जा सकते हैं।

यह पाक नाम लगभग हजार बार क़ुरआन में आया है। इसके अलावा खुदा का दूसरा कोई नाम ऐसा नहीं है जो इतनी बार क़ुरआन में आया हो। यह नाम दिल को नूरानी करता है, इन्सान को एक ताक़त और सुकून देता है और उसे नूर और रूहानियत की एक बड़ी दुनिया में ले जाता है।

“अहद” का मतलब यह है कि खुदा एक और अकेला है। वह दो तीन चार की गिनती में पढ़े और लिखे जाने वाला “एक” नहीं है बल्कि वह अपनी हस्ती के लिहाज़ से एक है। यानी उसके साथ कोई भी दूसरा नहीं है। उसके लिए एक के बाद कोई गिनती नहीं है। कोई उसके जैसा नहीं है। कोई उसकी तरह का नहीं है। वह बस वही है, उसके अलावा कोई और नहीं है।

इसकी दलील भी बिल्कुल सामने है: वह एक ऐसी हस्ती है जो हर हिसाब और हर पहलू से बेमिसाल है और उसकी किसी भी तरह से कोई हद नहीं है। यह भी साफ़ है कि जो हर हिसाब से लामहदूद (जिसकी कोई हद न हो) हो वह सिर्फ़ एक ही हो सकता है, दो नहीं। अगर दो होंगे तो दोनों की कोई न कोई हद ज़रूर मानना पड़ेगी तभी दो कहा जा सकता है। अगर उसकी कोई हद ही नहीं है तो उसके लिए दो कहना नामुमकिन है, इसलिए वह एक है।

आयत नम्बर-2

اللّٰهُ الصّٰمِد

यह वह खुदा है जिसकी ज़रूरत हर एक को है मगर उसे किसी की ज़रूरत नहीं है।

इस आयत में खुदा की एक और सिफ़त

बयान की गई है।

“समद” के बारे में हम एक हदीस में पढ़ते हैं कि एक बार मोहम्मद इब्ने हनफ़िया ने हज़रत अली^अ ने पूछा तो आपने फ़रमाया, “समद का मतलब यह है कि वह न नाम है और न जिस्म, न कोई उसके जैसा है और न उसकी कोई मूरत और सूरत है, न उसकी कोई शक़ल है और न तस्वीर, उसकी न कोई हद है और न वह महदूद है, न कोई जगह है, न कोई हालत, वह न यहाँ है और न वहाँ, न भरा है और न ख़ाली, न बैठा है और न खड़ा, न ठहरा है और न चलता-फिरता, न अंधेरे में है और न रौशनी में, न रूहानी है न जिस्मानी। इसके बाद भी कोई जगह उस से ख़ाली नहीं है और किसी भी जगह में उसे अपने अन्दर लेने और समेटने की सलाहियत नहीं है। उसका न कोई रंग है और न ही वह किसी की सोच में समाता है, उसकी कोई बू भी नहीं है और इनमें से कोई भी चीज़ उसके लिये बयान नहीं की जा सकती।”

इस हदीस से समझ में आता है कि अल्लाह के समद को दो-चार लफ़्ज़ों में बयान नहीं किया जा सकता बल्कि इसका दायरा काफ़ी फैला हुआ है और इसे समेट कर इस तरह बयान किया जा सकता है कि समद खुदा से हर उस चीज़ को दूर करता है जो हम इन्सानों के बारे में कही या सोची जा सकती है।

आयत नम्बर-3

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ

न उस से कोई पैदा हुआ है और न ही वह किसी से पैदा हुआ है। वह न किसी का बाप है और न किसी का बेटा।

इस आयत में यहूदियों, ईसाईयों और अरब के मुश्रिकों के उन अक्कीदों और नज़रियों की काट की गई है जो खुदा को किसी का बेटा या बाप मानते हैं। बहुत से लोग तीन खुदाओं की बात करते हैं: एक

बाप, दूसरा बेटा और तीसरा रूहुल कुदुस। क़ुरआन फ़रमाता है, “यहूदियों ने कहा, उज़ैर खुदा के बेटे हैं और ईसाईयों ने कहा, ईसा खुदा के बेटे हैं यह लोग जो बातें अपनी ज़बानों से कहते हैं यह पिछले काफ़िरों की बातें हैं। खुदा की लानत हो उन पर, यह किस तरह हक़ से मुँह फेर कर गुमराह हो गये।”⁽²⁾

अरब के मुश्रिकों का मानना था कि फ़रिश्ते खुदा की लड़कियाँ हैं। क़ुरआन कहता है, “उन्होंने अपनी जिहालत से खुदा के लिए लड़के व लड़कियाँ बना ली हैं।”⁽³⁾

आयत नम्बर-4

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

इस आयत में खुदा को बेमिसाल बताते हुए कहा गया है: “उस जैसा कोई नहीं है।”

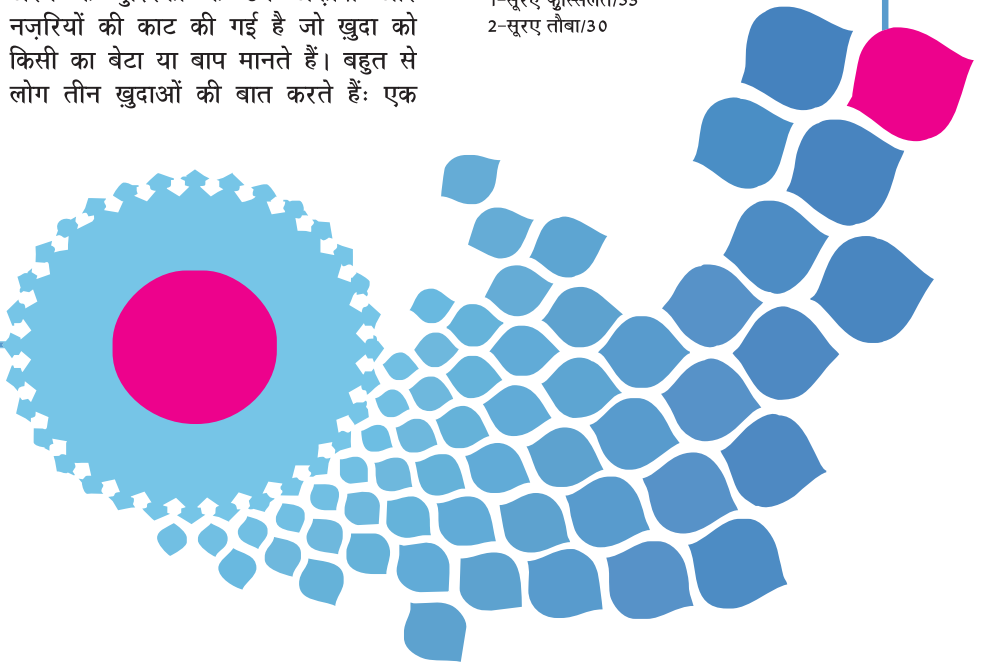
“कुफ़ो” उसे कहते हैं जो रुतबे और स्टेटस में बराबर हो। इसी तरह अगर कोई चीज़ किसी दूसरी चीज़ जैसी है तो उसे भी कुफ़ो कहा जाता है।

इस आयत को सामने रख कर कहा जा सकता है कि इन्सानों और दूसरी चीज़ों की जो हालतें और कंडीशन्स बदलती रहती हैं, उनकी जो तरह-तरह की हालतें होती हैं, उनके अन्दर जो कमियाँ होती हैं और उनके लिए जो रुकावटें होती हैं, उनमें से कोई भी खुदा के लिए नहीं होती। इसलिए कोई भी किसी लिहाज़ से भी उस जैसा नहीं है।

हज़रत अली^अ नहजुल बलागा में फ़रमाते हैं: “कोई उसका बेटा नहीं और न ही किसी ने उसे पैदा किया है। कोई उस जैसा है ही नहीं जो उसके बराबर आ सके। उस जैसा कोई सोचा भी नहीं जा सकता कि कहा जाए वह खुदा जैसा है।”

1-सूरए फ़ुसिलत/53

2-सूरए तौबा/30



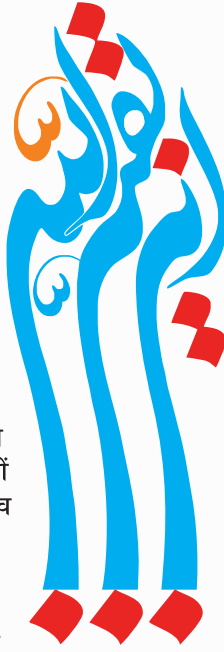
सूरज बादलों की ओट में

हम जिस ज़माने में जी रह रहे हैं उसे ग़ैबत का ज़माना कहा जात है यानी इस वक़्त हमारे ज़माने के इमाम^{अ०} हमारे बीच उस तरह से नहीं हैं है जिस तरह पहले इमाम हज़रत अली^{अ०} से लेकर ग़्यारहवें इमाम हज़रत इमाम हसन असकरी^{अ०} तक सभी इमाम लोगों के बीच उनके साथ और उनके सामने थे, लोग उनके पास आते थे और उन से अपनी दीनी व दुनियावी ज़रूरतों और मसलों के बारे में सवाल किया करते थे या उन से गाइडेंस लिया करते थे। आज वैसा नहीं है बल्कि खुदा की मर्जी से इमाम^{अ०} हमारी नज़रों से ओझल हैं लेकिन सवाल यह है कि इस ज़माने में इमाम^{अ०} से कैसे फ़ायदा उठाया जाए। इमाम तो हिदायत का चिराग़ होता है। चिराग़ उसी वक़्त गुमराही के अंधेरों में भटकने वाले इन्सानों को रास्ता दिखाएगा जब वह हमारे सामने रौशनी दे रहा हो। इमाम का काम लोगों के इल्मी और शरई मसलों का हल करना और उनकी राहनुमाई करना है, अब जबकि इमाम ही नज़रों से ओझल हैं तो फिर लोगों के मसलों का हल कौन निकालेगा? ऐसे में इमाम^{अ०} की ग़ैबत का क्या फ़ायदा है?

इसके जवाब में कहा जाएगा कि पहली बात तो यह है कि दुनिया में कुछ ही चीज़ें ऐसी हैं जिनके लिए इमाम का लोगों के बीच रहना ज़रूरी है, वरना इस संसार के सिस्टम के हिसाब से खुदा के बनाए हुए क़ानून के मुताबिक़ खुद इमाम

के मौजूद होने का असर उनके सबके सामने हाज़िर रहने से कहीं ज़्यादा बढ़कर है। इसी लिए जिस तरह हदीसों में इमाम^{अ०} को हिदायत का चिराग़ कहा गया है, वहीं हिदायत का सूरज भी कहा गया है, जैसा कि कुछ हदीसों में इमामे ज़माना^{अ०} को इस दुनिया में चमकने वाले सूरज के जैसा बताया गया है। जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी कहते हैं: मैंने अल्लाह के रसूल^{अ०} से पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल खुदा की आखिरी हुज्जत की ग़ैबत के ज़माने में लोग उनके मुबारक वुजूद से कैसे फ़ायदा उठाएंगे? आप ने जवाब में फ़रमाया: क़सम उस खुदा की जिसने मुझे नबी बनाकर भेजा है, लोग उसकी ग़ैबत में उनके नूर और विलायत से उसी तरह फ़ायदा उठाएंगे जैसे लोग सूरज के बादलों की ओट में चले जाने के बाद भी उस से फ़ायदा उठाते रहते हैं। इस हदीस में इमामे ज़माना^{अ०} को सूरज और ग़ैबत के ज़माने को सूरज के बादलों के पीछे चले जाने जैसा बताया गया है और यह बताया गया है कि जिस तरह लोग सूरज के बादलों के पीछे जाने के बाद भी सूरज की रौशनी और उसकी गर्मी से फ़ायदा उठाते हैं, उसी तरह इमामत के सूरज के ग़ैबत में चले जाने के बाद भी लोगों को इमाम से फ़ायदा पहुँचता रहेगा।

अब एक नज़र इस मिसाल पर डालते हैं और इमामे ज़माना^{अ०} और सूरज के बीच जो सिमिलरिटी पाई जाती है उसे समझने की कोशिश करते हैं:



1- जिस तरह सूरज सोलर सिस्टम में प्लानेट्स के मूवमेन्ट्स का सेंटर होता है, उसी तरह इमामे ज़माना^{अ०} का वुजूद भी इस संसार का सेंटर है। उन्हीं के मुबारक वुजूद से यह दुनिया बाकी है, सब को उन्हीं के दम से रिज़्क मिल रहा है और उन्हीं की वजह से ज़मीन व आसमान भी बाकी हैं।

2- सोलर सिस्टम में रहने वालों के लिए सूरज से फ़ायदा उठाना इसी पर डिपेंड नहीं करता कि सूरज नज़रों के सामने हो बल्कि बादलों के सामने आ जाए, मौसम की ख़राबी, बिजली, चमक, बर्फ़ और बारिश के बाद भी सूरज फ़ायदा पहुँचाता रहता है, इसी तरह खुदा के उस वली के जाहिरी वुजूद के ग़ैबत में चले जाने के बाद भी दुनिया उनके वुजूद की बरकत से महरूम नहीं है बल्कि ज़मीन और आसमान का बाकी रहना, दुनिया के सिस्टम का मैनेजमेंट, लोगों की हिदायत पाना वगैरा सब इमाम के वुजूद की ही बरकतें हैं जिनके लिए ग़ैबत कोई रुकावट नहीं है।

3- जब बादल सूरज और ज़मीन पर रहने वालों के बीच आ जाता है तो वह सूरज को नहीं छुपाता बल्कि देखने वालों की नज़रों के सामने आ जाता है और उन्हें सूरज के दीदार से महरूम कर देता है क्योंकि सूरज इतना बड़ा है कि बादल उसे छुपा नहीं सकता और दूसरी तरफ़ सूरज से पहुँचने वाले फ़ायदे ऐसे हैं कि बादल उनके रास्ते में रुकावट बन ही नहीं सकता है।

उस इन्सान का वुजूद जो कि इस संसार और लोगों की ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी है, इतना बड़ा है कि कोई भी चीज़ उसे दूसरों तक पहुँचाने से रोक नहीं सकती। उसके और संसार के बीच जो रिश्ता है उसे ख़त्म ही नहीं कर सकती। भला यह कैसे हो सकता है कि वह इन्सान जो खुदा का ख़लीफ़ा है और खुदा की इजाज़त से दुनिया का मैनेजमेन्ट उसके हाथों में है उसकी ग़ैबत

से संसार के सिस्टम में कोई प्रॉब्लम आ जाए ?

4- बादल सिर्फ़ उन लोगों की नज़रों को सूरज के दीदार से महरूम कर देते हैं जिनकी नज़रें बादलों के पीछे नहीं देख सकती, लेकिन जो आँखें बादलों के पीछे भी देख सकती हैं उनके रास्ते में बादल भी रुकावट नहीं बन सकते।

इमामे ज़माना^{अ०} का मुबारक वुजूद उन नज़रों से ज़रूर ओझल है जो सिर्फ़ इस फ़िज़िकल और मैटेरियल दुनिया में उलझे हुए हैं, लेकिन

जो लोग अपनी ख़्वाहिशों और नफ्स को कन्ट्रोल करके मेटा-फ़िज़िकल दुनिया में रहते हैं वह हर वक़्त इमाम के नूरानी चेहरे की ज़ियारत करते हैं।

5- सूरज हमेशा अपनी रौशनी पहुँचाता रहता है, उसकी रौशनी कभी ख़त्म नहीं होती, किसी एक जगह और किसी एक हद में भी नहीं रहती, बल्कि जो भी उस से अपनी क़ाबिलियत के हिसाब से फ़ायदा उठा सकता है वह उठाता है। इमामे ज़माना^{अ०} के मुबारक वुजूद से पूरी दुनिया को फ़ायदा पहुँचता है अब जिसकी जितनी क़ाबिलियत है वह उतना ही फ़ायदा उठा सकता है।

6- अगर सूरज अपनी रौशनी और गर्मी पहुँचाना छोड़ दे और बादलों के पीछे से भी फ़ायदा न पहुँचाए तो क्या होगा ? दुनिया अंधेरे से भर जाएगी, सब कुछ ठण्डा पड़कर ख़त्म हो जाएगा और ज़मीन पर ज़िन्दगी बाकी नहीं रहेगी, इसी तरह इमामे ज़माना^{अ०} हमें अपने वुजूद की बरकत से महरूम कर दें तो इस दुनिया में हमारा जीना दूभर हो जाएगा और ज़िन्दगी मुश्किल हो जाएगी। जैसा कि खुद इमाम भी शेख़ मुफ़ीद को एक ख़त में लिखते हैं: “हम तुम लोगों से दूर नहीं हैं, और कभी भी तुम लोगों को नहीं भुलाते हैं, वरना सख़्तियाँ और कठिनाईयाँ चारों तरफ़ से तुम लोगों को घेर लेतीं और दुश्मन तुम्हें ख़त्म कर देते।”



अलहाज आलिम हुसैन रिज्वी
रिटायर्ड ए.जी.एम., यूनिन बैंक
(9450543234)

वह कौन था ?

वह कौन था जिसकी आवाज़ चौदह सदियों को पार करती हुई आज भी दुनिया में गूँज रही है और दुनिया के तमाम लोगों को पैग़ाम दे रही है कि:

- खुदा की क़सम! मैं ज़ालिम से मज़लूम का हक़ वसूल करूँगा और ज़ालिम की नाक में नक़ेल डाल कर उसको खींचता हुआ हक़ की तरफ़ लाऊँगा चाहे उसको कितना ही बुरा क्यों न लगे।

- खुदा की क़सम! अगर किसी ने लोगों के माल में कुछ भी बेईमानी की तो मैं उस पर ऐसी कड़ी कारवाई करूँगा कि वह कंगाल और बेइज़्ज़त हो जाएगा।

- रिश्तख़ोर से कहा कि खुदा से डरो और लोगों का माल उनको वापस कर दो। अगर तुमने उसको वापस न किया और अगर मैंने तुमको पा लिया तो खुदा के सामने तुम्हारे बारे में जो मेरी ज़िम्मेदारी है, उसे पूरा करूँगा और वह तलवार लगाऊँगा कि तुम सीधे जहन्नम में जाओगे।

- क्या मैं सिर्फ़ इस बात पर क़नाअत (इतमिनान) कर लूँ कि लोग मुझे अमीरुलमोमिनीन कहते हैं और उन पर हुई तकलीफ़ों में मैं उनका साथ न दूँ ?

- जंग के मैदान में जब तक सामने वाला खुद लड़ाई शुरू न करे तुम उनसे जंग की शुरुआत न करना। अगर वह मार जाएं तो

जो मैदान से भागे उसको क़त्ल न करना और भागे हुए का पीछा न करना। मजबूरों और ज़ख़्मियों को क़त्ल न करना और औरतों व बच्चों को तकलीफ़ न पहुँचाना।

- कुछ लोगों ने किसी को गाली दी तो उसके चाहने वालों को बुरा लगा और उन्होंने भी गाली देकर बदला ले लिया। जब यह सब हुआ तो इमाम अली^अ ने अपने साथियों से कहा कि मैं इसको पसन्द नहीं करता कि तुम लोग मेरे साथी होकर गाली बकने वाले बनो।

- तुम्हारा दोस्त वह है जो तुम्हें बुराई से रोके और तुम्हारा दुश्मन वह है जो तुमको बुरे काम के लिए उकसाए।

- सच्चाई को अपनाओ चाहे इसमें नुक़सान ही क्यों न हो और झूठ से बचो चाहे इससे तुमको फ़ायदा ही क्यों न पहुँचता हो।

- लोग या तो मज़हब में तुम्हारे भाई हैं या आदमी की औलाद होने के नाते तुम्हारे बराबर हैं। इसलिए उन से भी उसी तरह का बर्ताव करो जिस तरह से तुम चाहते हो कि खुदा तुम्हारे साथ करे।

- ऐ दुनिया किसी और को धोखा दे। मुझे अपने माल में से ज़िन्दा रहने के लिए सिर्फ़ रोटी चाहिए। मेरी निगाह में ज़िन्दगी, खुदा ने जिन्हें पैदा किया है उन्हें फ़ायदा पहुँचाने का नाम है।

- जो कुछ ज़मीन व आसमान में है अगर

वह सब मुझे दे दिया जाए और कहा जाए कि खुदा के हुक्म के खिलाफ़ काम करते हुए किसी चींटी के मुँह से एक जौ का छिलका भी छीन लूँ तो मैं ऐसा नहीं करूँगा। मेरे लिए यह सारी ज़मीन उस एक पत्ती से ज़्यादा गिरी हुई है जो किसी टिड्डी के मुँह में दबी हुई हो।

- गवर्नरों से कहा: लोगों की फ़रियाद को पहुँचो और उनकी ज़रूरतों को पूरा करो क्योंकि तुम्हें मिलने वाली सारी पूँजी उन्हीं के हाथों में है। किसी भी आदमी को उसकी ज़रूरी चीज़ों से महरूम (वंचित) न करो और उसके मक़सद में रुकावट न बनो। टैक्स वसूली के लिए किसी के जाड़े या गर्मी के कपड़े न बेचो। ऐसा चौपाया जानवर न लो जो उसके काम आता हो और एक सिक्के के लिए किसी को कोड़ा न मारो।

- टैक्स और दूसरे तरीकों से जमा माल इलाक़े में सारे लोगों के लिए है। इसे तुम अपने इस्तेमाल में न लाओ।

- अपने ही जैसे किसी और के बन्दे न बनो क्योंकि खुदा ने तुम्हें आज़ाद पैदा किया है।

- ख़बरदार ऐसी चीज़ों में अपना हक़ ज़्यादा न चाहो जिसमें दूसरे सब लोगों का बराबर का हक़ है।

- वह गुनाह जिसकी माफ़ी नहीं है वह बन्दों का एक-दूसरे पर जुल्म करना है।

- खुदा के बन्दों पर जुल्म सबसे बुरा काम है।

- मैं मज़लूम का इंसान उसके ज़ालिम से करके रहूँगा।

- दूसरों के लिए भी वही पसन्द करो जो अपने लिए पसन्द करते हो और दूसरों के लिए भी वह न चाहो जो अपने लिए नहीं चाहते।

- सबसे ख़राब हुकूमत करने वाला वह है जिसकी वजह से वहाँ की पब्लिक मुसीबत में पड़ जाए।

- खुदा ने मुझे इन लोगों का इमाम (हाकिम) बनाया है। इसलिए मुझ पर यह बात भी वाजिब कर दी है कि अपने निजी आराम और खाने पीने में इतना हाथ रोकूँ कि मेरा रहन-सहन ग़रीबों की तरह हो जाए ताकि ग़रीब लोग मेरी जिन्दगी के फ़कीराना तरीक़े की पैरवी करें और मालदार अपनी मालदारी के बलबूते पर बेजा घमंड में पड़ कर मुख़ालिफ़त न करें।

- अगर कोई फ़कीर भूखा रहता है तो वह सिर्फ़ इसलिए कि किसी मालदार ने उसका हिस्सा रोक लिया है। मैंने किसी के पास ढेर सारी आराम की चीज़ें नहीं देखीं मगर यह कि उन चीज़ों के साथ-साथ किसी न किसी का हक़ ख़त्म होते भी देखा है।

- एक गवर्नर से कहा: मुझे ख़बर मिली है कि तुम किसी मालदार आदमी के यहाँ वलीमे में गये थे। यह दावत रिश्वत है। अगर यह दावत किसी हक़ को पहुँचाने के लिए दी गई तो यह तुम्हारा काम था कि हक़दारों को उनका हक़ बग़ैर रिश्वत के दे दो। अगर ग़लत को सही करने के लिए दी गई तो ऐसा करना बिल्कुल मंज़ूर नहीं चाहे रिश्वत में सारी ज़मीन ही क्यों न दे दी जाए। फिर तुम ऐसी दावत में गये ही क्यों जिसमें सिर्फ़ मालदारों को बुलाया गया था लेकिन फ़कीरों और ग़रीबों को नहीं पूछा गया। इस काम से ग़रीब और अमीर में फ़र्क़ पैदा किया गया है और ग़रीबों के दिलों को तकलीफ़ पहुँची है।

- मालगुज़ारी के मामले में मालगुज़ारी देने वाले के फ़ायदे को ध्यान में रखना क्योंकि इनकी वजह से ही दूसरों के हालात ठीक किये जा सकते हैं। उनके सामान में से कोई चीज़ इसे वसूलने के लिए न बेच देना इसलिए कि खुदा ने हमें हुक्म दिया है कि जो उसकी ज़रूरत से ज़्यादा हो बस वही लें।

- सारी प्रजा में मजबूर व लाचार लोग जैसे छोटे बच्चे और कमज़ोर बूढ़े तुम्हारे इंसान के ज़्यादा मोहताज हैं। इसलिए हर एक का हक़ उसको अदा करके खुदा के सामने पेश करने के लिए अपने को तैयार रखो। उन यतीमों और बूढ़े लोगों का पूरा खयाल रखो जो खुद न तो अपनी रोज़ी कमा सकते हैं और न ही अपनी रोज़ी के लिए दूसरों के आगे हाथ फैलाने के लिए खड़े हो सकते हैं।

- अगर मुझे इंसान के लिए मसनद बिछा दी जाए और मैं उस पर बैठूँ तो मैं तौरेत वालों (यहूदी) के मुक़द्दमों का फ़ैसला उनकी किताब तौरेत से, इंजील वालों (ईसाई) का फ़ैसला उनकी इंजील (बाइबल) से और कुरआन वालों (मुसलमान) का फ़ैसला उनके कुरआन से इस तरह करूँगा कि हर किताब पुकार उठेगी कि अली ने सच कहा।

- ग़ैर मुस्लिमों के माल हमारे माल जैसे हैं और उनकी जानें हमारी जानों जैसी हैं।

- तुम्हें अगर साथ देना है तो उन अच्छाईयों का साथ दो जो समाज को अच्छा बनाएँ जैसे पड़ोसी के हक़ की हिफ़ाज़त करना, किये हुए वादे को निभाना, अच्छे लोगों के कहे पर चलना और बुरे लोगों की बुराई करना, सब से अच्छा बर्ताव करना, जुल्म से दूर रहना, खून-ख़राबे से दूर भागना, अल्लाह के बन्दों के साथ इंसान बरतना और ज़मीन पर बुराईयाँ न फैलाना।

- खुदा की क़सम मैंने दूसरों की तरह तुम्हारी दुनिया से ख़ज़ाना नहीं बनाया, न माल व दौलत इकट्ठा की। इस फटी चादर से हट

कर मैंने अपने लिए कोई लिबास भी नहीं रखा। अगर मैं चाहता तो शहद और गेहूँ की रोटी का भी अपने लिए इन्तेज़ाम कर लेता और रेशमी लिबास पहन सकता था लेकिन हवस मुझ पर क़ब्ज़ा नहीं जमा सकती और लालच मुझे अच्छी गिज़ा पसन्द करने पर तैयार नहीं कर सकती। हो सकता है कि हिजाज़ व यमामा में कोई आदमी ऐसा भी हो जिसे एक रोटी की भी उम्मीद न हो और अपनी पूरी उम्र में एक बार भी उसका पेट पूरा न भरा हो। ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं ख़ूब पेट भर कर आराम की नींद सो जाऊँ और मेरे आस पास बहुत से ऐसे लोग भी हों जिनकी हालत भूख से ख़राब हो और जिनके कलेजों में आग लगी हो। क्या मैं सिर्फ़ नाम का अमीरुलमोमिनीन बनना पसन्द करूँ और लोगों के दुख-दर्द में शरीक न हूँ ?

आखिर वह कौन था जिसकी आवाज़ चौदह सदियों बाद भी गूँज रही है और जिसकी बातें आज भी दुनिया को झिंझोड़ रही हैं ? आइए हम आपको बताते हैं कि वह और कोई नहीं बल्कि अल्लाह के रसूल हज़रत मोहम्मद^{१०} के चचेरे भाई, उनकी बेटी जनाबे ज़हरा^{१०} के शौहर, पहले इमाम और मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली^{१०} हैं जिनकी बातें आज भी दुनिया को रास्ता दिखा रही हैं। रसूले इस्लाम^{१०} ने फ़रमाया था कि ऐ अली! मैं और तुम इस उम्मत के बाप हैं। काश यह उम्मत अपने बाप के कहे पर चली होती तो सारी दुनिया के लोग इस्लाम से नफ़रत करने के बजाएँ इस्लाम की तरफ़ क़दम बढ़ाते होते। मगर यह काश सिर्फ़ 'काश' बनकर रह गया।



बच्चों को मारिये नहीं; समझाइये

जब बच्चों को मारा जाता है तो इस से उन पर बहुत बुरा असर पड़ता है और वह गलत चीजें भी सीख जाते हैं। मारने से बच्चे सुधरते नहीं हैं इसलिए यह समझना जरूरी है कि मारना नहीं चाहिए तो फिर क्या करना चाहिए।

1- जब कोई बड़ा जैसे माँ, बाप या टीचर बच्चे को मारता है तो बच्चा उसके सामने खुद को कमजोर पाता है और बड़े के सामने खुद को बेबस समझता है जिसकी वजह से बच्चा दुखी रहता है और उसके अन्दर चिड़चिड़ापन आ जाता है।

बच्चों को मारने के बजाए यह सिखाइये कि वह क्या करें और क्या न करें क्योंकि अकसर बच्चे यह नहीं जानते कि कौन सा काम अच्छा है और कौन सा अच्छा नहीं है। यह बात समझाने के लिए जल्दबाजी से भी काम न लीजिए बल्कि सन्न और हौसले से उन्हें समझाइये।

2- मारने का एक नुकसान यह भी है कि बच्चा यह नहीं सीख पाता कि किसी प्रॉब्लम को कैसे हल किया जा सकता है। वह बस यही सीखता है कि उसने बहुत बुरा किया है जिसकी वजह से उसे मार पड़ी है और इस तरह वह अपनी नजर ही में गिर जाता है जिसका असर उसकी पूरी जिन्दगी पर पड़ सकता है। इसलिए आप न सिर्फ उसे मारने से बचिए बल्कि बच्चे को डाँटते वक्त या मारते वक्त जो बातें आप कह रही हैं उनकी तरफ भी ध्यान रखिये। आप की ज़बान से निकलने वाले लफ़्ज़ उस पर मार से ज़्यादा असर डाल सकते हैं। इसलिए गुस्से पर कन्ट्रोल रखिये। धीरज रखिये और कूल रहिये।

3- मार खाने से बच्चे को गुस्सा भी आता है और उसका दिल भी दुखता है। उसके अंदर नफरत का एहसास जन्म ले लेता है और उसके अन्दर बदले की आग भी सुलग सकती है।

इसलिए बच्चे को प्यार से समझाइये कि

उसने क्या ग़लती की है। बच्चे छोटे हों तब भी आप यकीन रखिये कि वह फैमिली के रूल्स को समझते हैं और फॉलो भी करते हैं लेकिन बस वही रूल उनकी समझ में आते हैं जो उन्हें डिसिप्लिन व बैलेंस सिखाएं जैसे सोने का टाइम, ब्रश का टाइम या खाने का टाइम वगैर।

4- मार खाने की वजह से बच्चे को सही-ग़लत समझने में भी प्रॉब्लम हो सकती है।

बच्चे को सिखाइये कि अपने एहसास को बयान करने के लिए वह ऐसे तरीके अपनाए जो उसे नुकसान न पहुँचाते हों। बच्चे के जज़्बात को समझिये और उसे बताइये कि आप उसके जज़्बात को समझ रही हैं और आपका पूरा ध्यान उसकी तरफ ही है।

5- जब आप बच्चे को मारती हैं या कोई सज़ा देती हैं तो उसका मतलब यह होता है कि आप बिल्कुल ठीक कर रही हैं और आप हक़ पर हैं। इस से बच्चा भी यही समझता है कि उसे भी अपने बड़ों की तफ़्दील करते हुए ऐसा ही करना चाहिए। जब वह बड़ा होता है तो वह भी ऐसा ही करता है।

6- मार सिर्फ बच्चे के जिस्म को नहीं बल्कि उसके जज़्बात को भी ज़ख्मी करती है, जिसका असर उसकी पढ़ाई पर भी पड़ता है। जब वह स्कूल जाता है तो दूसरों के साथ दोस्ती करना उसके लिए एक मुश्किल काम बन जाता है।

ऐसे में बच्चे की तरफ ध्यान दीजिए, उसके अच्छे कामों की तारीफ़ कीजिए और उसे एप्रिशियेट कीजिए। बच्चे को एहसास दिलाइये कि आप उस से मोहब्बत करती हैं।

7- मार-पीट बच्चे को यह भी सिखाती है कि वह बहुत बुरा है। फिर वह ज़िद्दी बन जाता जाता है और वह यह मान लेता है कि जब वह बुरा है तो उसे बुरा बन कर ही रहना चाहिए।

जब बच्चा कोई ग़लत या बुरा काम करे तो

फ़ौरन ही रीएक्शन न दिखाइये। उसे कुछ वक्त के लिए छोड़ दीजिए। थोड़ी देर के लिए उसे कुर्सी या सीढ़ी पर बिठा कर या कमरे में अकेला छोड़ दीजिए। इससे बच्चा अपने किये पर पछताएगा, थोड़ी देर के लिए उसे गुस्सा ज़रूर आएगा लेकिन उसे ग़लती का एहसास होगा।

8- मारने से बच्चा कभी वह चीज़ नहीं सीखेगा जो आप चाहती हैं। वह सही बात, सही तरीका और जिन्दगी का सही उसूल नहीं सीख सकेगा।

जो बच्चे मार खाते हैं वह अन्दर से टूट जाते हैं। उनके अन्दर सही और ग़लत को समझने की सलाहियत खत्म हो जाती है। उनकी नज़रें हमेशा दूसरों पर होती हैं ताकि दूसरे ही उन्हें सही और ग़लत के बारे में बताएं।

9- मारपीट का एक नुकसान यह भी है कि बच्चे के अन्दर डर पैदा हो जाता है और बच्चा जितनी मार खाएगा उसका डर उतना ही बढ़ता जाएगा या डर बिल्कुल ही खत्म हो जाएगा और यह दोनों चीज़ें ख़तरनाक हैं।

खुद को कन्ट्रोल कीजिए। जो बच्चा शरारत या ज़िद की वजह से कन्ट्रोल से बाहर हो चुका है उसे सुधारने का तरीका यही है कि माँ-बाप और बड़े खुद पर कन्ट्रोल रखें। बच्चे को भी गुस्से और ज़िद पर कन्ट्रोल करना सिखाइये। उसकी इंसल्ट न कीजिए। अगर उसकी इंसल्ट होगी तो उसका गुस्सा बढ़ जाएगा। यह बात कभी न भूलिये कि आप बड़े हैं, बच्चे नहीं हैं।

10- कुछ माँ-बाप जब थके होते हैं या उनका मूड ऑफ़ होता है और उनका बच्चा रोने लगता है तो उसका रोना उन्हें बहुत बुरा लगता है। ऐसे में वह उसे ऊपर उछाल देते हैं या ज़ोर-ज़ोर के झटकों से हिला देते हैं। यह एक ख़तरनाक काम है। इस से बच्चे के दिमाग़ पर बुरा असर पड़ सकता है। ●

एक खतरनाक बीमारी

■ उम्मे मोहम्मद अब्दुल्लाह

तो नहीं गिराया”। मासूमियत से बोलती किरन जहाँ अम्मी जान की बातों की काट कर उन्हें शर्मिन्दा कर गई थी वहीं सायरा भी बेवक़्त ग़लती के सामने आ जाने पर परेशान हो गई थी। किरन के चेहरे पर हलकी सी मुस्कुराहट आ गई थी। जिसे दादी जान के अलावा किसी ने महसूस नहीं किया और बात आई-गई हो गई।

“अरे दादी जान सुनाईये ना कहानी।” रात को सब बच्चे दादी जान के पास इकट्ठा हो गये थे। “अच्छा भई सुनो कहानी।” सब बच्चे चुप होकर सुनने के लिए तैयार थे।

“एक ख़ूबसूरत सी वैली थी। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के बीच हरी-भरी वैली। हरियाली से लहलहाती, झरनों से गुनगुनाती, रंगारंग फूलों की खुशबुओं से हवाओं को महकाती इस वैली में एक छोटा सा घर था। उस घर में दो बहनें रहती थीं। निदा और रिदा। दोनों बहुत प्यारी और अच्छी बच्चियाँ थीं। दोनों बहनों में ख़ूब दोस्ती और मोहब्बत थी। दौड़-दौड़ कर सारे घर का काम करतीं और मम्मी-पापा की हर बात मानती थीं। लेकिन फिर अचानक!” दादी साँस लेने को रुकीं तो बच्चों की तो जैसे साँस ही अटक गई थी।

“क्या हुआ अचानक?” काशिफ़ ने बेचैन होकर पूछा।

“निदा बीमार पड़ गई और बीमारी भी

ऐसी वैसी नहीं थी। बड़ी ख़तरनाक बीमारी थी।” कमरे की मधम रौशनी और दादी जान के लहजे के उतार-चढ़ाव ने बच्चों को अपने जादू में ले लिया था।

“कौन सी बीमारी लग गई थी उसे?” किरन की आवाज़ से परेशानी झलक रही थी।

“क्या कैंसर?”

“नहीं भई! कैंसर से भी ख़तरनाक बीमारी। उसके दिल में एक ब्लैक डॉट लग गया था जो धीरे-धीरे फैलता जा रहा था। और तो और उसकी बीमारी का असर रिदा पर भी पड़ रहा था।”

“निदा की बीमारी से रिदा भी परेशान हो रही थी। क्या सच में यह बहुत ख़तरनाक बीमारी थी?” सायरा ने कमेन्ट किया।

“भई बच्चो! तुम लोग बोलते बहुत हो। अब अगर कोई कहानी के बीच में बोला तो मैं कहानी नहीं सुनाऊँगी।” दादी जान ने बच्चों को धमकी दी। सब बच्चे एकदम चुप हो गये।

“निदा और रिदा के पापा हकीम थे। एक दिन उन्होंने रिदा और निदा को खेल, पढ़ाई और घर के कामों के वक़्त लड़ते देखा तो समझ गये कि निदा बीमार है और रिदा भी उसकी वजह से बीमार पड़ रही है। वह जल्दी से अपने क्लिनिक गये और एक

“शाबाश सायरा! सुबह बहुत अच्छी तरह से किचन साफ़ किया तुम ने। अब दादी जान को अच्छी सी चाय भी पिला दो।” मम्मी ने सायरा को सराहते हुए दादी जान की तरफ़ देखा।

“माशाअल्लाह आपकी पोती बहुत सलीके वाली है। अभी तो छोटे-छोटे काम ही करवाती होंगी इस से लेकिन बहुत अच्छे से करती है।” अम्मी दादी जान की तरफ़ देख रही थीं जबकि दादी जान की नज़रें लगातार किरन के चेहरे के बनते-बिगड़ते एक्सप्रेशन पर थीं।

सायरा चाय बनाकर लाई तो किरन ने एकदम से ऊँची आवाज़ में उस से कहा, “सायरा आपी कल आप से दूध गिर गया था ना आज तो ध्यान से बनाई न चाय, दूध

गोल्डेन और एक सिलवर कैप्सूल उठा लाए। गोल्डेन कैप्सूल उन्होंने निदा को और सिलवर कैप्सूल रिदा को खिला दिया। रात हो चुकी थी इसलिए दोनों बहनें जल्द ही सो गयीं।

अगली सुबह बहुत अच्छी थी, दवा असर करने लगी थी। निदा ने रिदा की तरफ देखा जिसने रंग बिरंगा दोपट्टा ओढ़ रखा था। रिदा को जब भी निदा उस दोपट्टे में देखती थी तो उसे अपने दिल में बहुत घुटन महसूस होती थी और उसका जी चाहता था कि यह दोपट्टा वह उस से छीन कर खुद ओढ़ ले। लेकिन आज जैसे ही उसे घुटन महसूस हुई तो फौरन ही उसकी नज़रें अपने दोपट्टे पर आकर ठहर गई और वह अपने दोपट्टे के लिए अल्लाह का शुक्र अदा करने लगी। अल्लाह से अपने लिए फज़ल और करम माँगने लगी। साथ ही साथ उसके मुँह से रिदा के दोपट्टे के रंग हमेशा बाकी रहने के लिए दुआ निकली। थोड़ी देर गुज़री थी कि दोनों बहनें घर के काम में माँ का हाथ बटाने लगीं। निदा की आदत थी कि अगर काम के बीच रिदा से कुछ ग़लत हो जाता था तो वह उस ग़लती को सबके सामने सुनाती थी और खुद को उस से बेहतर साबित करने की कोशिश करती थी लेकिन आज जब ऐसी सिचुवेशन सामने आई तो उसकी बोलती ज़बान को जैसे एकदम किसी ने जकड़ लिया। उसके सामने एक बड़ा सा आईना कहीं से आ गया था जिसमें एक बहुत बुरी शक्ल वाला शैतान हज़रत आदम^अ का नाम लेकर नारे लगा रहा था और कह रहा था: मैं इस से बेहतर हूँ।

साथ ही कुछ लोग भी खड़े थे जो खुद को और अपनी कौम को सबसे बेहतर साबित करते हुए आखिरी नबी की नुबुव्वत को झुठला रहे थे। शैतान और काफ़िरों के चारों तरफ़ आग के शोले उठने लगे थे और उन अंगारों में निदा की तस्वीर भी उभरने लगी थी जो कह रही थी कि मैं रिदा से अच्छी हूँ।

निदा ने घबरा कर आईना तोड़ना चाहा तो आईना कहीं ग़ायब हो गया और उसने शैतान से खुदा की पनाह माँगी। साथ ही उसके दिल और दिमाग़ में यह एहसास होने लगा कि सबसे बेहतर और सबसे बड़ा सिर्फ़ खुदा है। नेकी की तौफ़ीक़ और बुराई से बचाव अल्लाह की दी हुई तौफ़ीक़ है। दुनिया की चीज़ों और ज़ाहिरी कामयाबियों में एक-दूसरे से मुकाबला करना या आगे बढ़ने की कोशिश करना या दूसरे को हराने के बारे में सोचना कोई बड़ा कमाल नहीं है बल्कि असली मुकाबला तो नेकियों में एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने का मुकाबला है।

दिन आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ता रहा। निदा पर दवा असर करती गई और उसके दिन की घुटन कम होती चली गई। दूसरी तरफ़ रिदा सुबह उठते ही सूरए फ़लक़ और सूरए नास की तिलावत करने लगी थी। यह तिलावत दिन भर जारी रही। जब-जब रिदा की तरफ़ से कोई ऐसी बात होती जिस से निदा अब से पहले ऐसी सिचुवेशन में रिदा से लड़ने को तैयार हो जाया करती थी अब मुस्कुरा कर मोहब्बत से रिदा को जवाब देती और हर काम में उसकी हेल्प के लिए खुद से ही आगे बढ़ती।

उसने आज दिन में निदा को मोतियों के फूलों का हार बनाकर गिफ़्ट में दिया था। दिन गया और रात आई। दवा अपना रंग लाई। निदा के दिल का काला धब्बा दूर हो गया था। उसका दिल अब पहले की तरह निखरा-निखरा और साफ़ हो गया था। रिदा भी बहुत खुश लग रही थी।

कहानी ख़त्म हो चुकी थी। सब बच्चे मुस्कुरा रहे थे जबकि किरन किसी सोच में डूबी हुई थी।

“क्या कोई बता सकता है कि निदा को कौन सी बीमारी थी?” दादी जान ने बच्चों से पूछा।

“जी दादी जान मैं समझ गई, निदा को हसद और जलन की बीमारी थी।” सायरा ने

जल्दी से जवाब दिया।

“हाँ बच्चों! निदा को हसद की बीमारी थी। यह एक बहुत ख़तरनाक बीमारी है। अल्लाह के नबी फ़रमाते हैं, ‘हसद (जलन) से दूर रहो क्योंकि हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जैसे आग सूखी लकड़ियों को खा जाती है’। इसलिए दुनिया और आख़िरत की भलाई के लिए इस बीमारी को जानना और इस से बचने के तरीक़ों को जानना ज़रूरी है।

“जी दादी जान! मैं समझ गई। मैं इस बीमारी से बचने की पूरी कोशिश करूँगी।” किरन ने कुछ सोचते हुए कहा।

“सिर्फ़ तुम क्यों हम सब इस ख़तरनाक बीमारी के लिए हमेशा होशियार रहेंगे इन्शाअल्लाह!” सायरा ने पक्के इरादे के साथ कहा तो सब बच्चों ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई। ●

S.No.:.....



RNI NO. UPHIN/2012/43577

**ENGLISH
MEDIUM**



Our Focus

- * CBSE Curriculum
- * Low Student-Teacher ratio
- * Interactive teaching techniques
- * Loving and caring atmosphere
- * Qualified & Dedicated Teachers
- * Deeni Taleem



ADMISSION OPEN

Pre-School To Class V



Pre-School Also Available

MUSAHIB GANJ, LUCKNOW

8840206083, 6392442920